• वर्ष 49 • अंक 02 • जनवरी 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

₹ 15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 01 ● जनवरी 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

हँसती दुनिया

कविताएं

7. आया है नववर्ष
: डॉ. बच्चन पाठक

11. गणतंत्र के गीत गाएं
: राजकुमार 'राजन'

11. गणतंत्र
: सेवा नन्दवाल

17. सर्दी के दिन
: गफूर 'स्नेही'

17. सर्दी की ऋतु आई
: अनिल द्विवेदी

27. मेरा देश
: घमंडीलाल अग्रवाल

27. हमारा भारतवर्ष
: महेन्द्र सिंह शेखावत

31. लक्ष्य बड़े हैं
: राजेन्द्र निशेश

39. प्रभात वेला
: उदय मेघवाल

39. जाड़े का मौसम
: हरप्रसाद रोशन

कहानियां

10. सुखदा मणि
: स्वीटी हशमतराय

16. मन का मैल
: राधेलाल 'नवचक्र'

18. विक्रमादित्य का सिंहासन
: आनन्द प्रकाश

22. उपकार का बदला
: आर. डी. भारद्वाज

32. सोच का तराजू
: राजेश अरोड़ा

40. एक खाऊं-दो या ...
: अनिल सतीजा

46. इसी कुर्सी पर ...
: पूजा संगतानी

विशेष/लेख

8. खुशियों के रंग ...
: अर्चना जैन

20. जल की रानी का ...
: कमल सौगानी

26. पहेलियां
: राधा नाचीज

28. ज्वालामुखी
: कैलाश जैन

31. 90 मील तक उड़ान ...
: डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

42. देश-विदेश के विचित्र वृक्ष
: राहुल शर्मा

43. बर्फ में बेफिक्र बकरी
: विद्या प्रकाश

सबसे पहले

सन्देश नववर्ष का

हर वर्ष नया वर्ष आता है और हमारे लिए एक सन्देश लाता है। देखो मैं भी बदल गया हूँ तुम भी बदलो। हजारों वर्षों से मैं भी यात्रा कर रहा हूँ। मैंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। मैं हमेशा आगे ही बढ़ा हूँ। इस वर्ष फिर मैं 2021 से 2022 में स्थापित हो गया हूँ। मेरा स्वभाव है मैं पीछे नहीं जा सकता। मैं केवल आगे बढ़ना जानता हूँ।

हमने जब से जन्म लिया है हम भी तो आगे बढ़ते जा रहे हैं। एक दिन, दो दिन फिर एक माह और फिर एक वर्ष के हो गये। जैसे-जैसे समय निकला हमारी आयु भी बढ़ती गई। इस प्रकार हमने भी हर वर्ष अपना जन्मदिन मनाया अनेकों से शुभकामनाएं लीं भी और अन्य लोगों को भी दीं जिनके जन्मदिन आएं।

सोचने की बात तो यह है कि वर्ष तो आएंगे और चले जाएंगे या आगे बढ़ जाएंगे। इसी प्रकार हमारे जीवन में अनेकों जन्मदिन आएंगे और हम आगे बढ़ जाएंगे परन्तु क्या हम जान पाएंगे कि क्या सिर्फ जन्म लेना ही जीवन है, क्या शिक्षा प्राप्त कर लेना, नौकरी, शादी कर लेना ही जीवन है?

सब लोग इस तरह जी रहे हैं तो हमें भी ऐसा लगने लगता है कि यही जीवन है और इस औपचा. रिकता को हम भी निभाने लग जाते हैं।

प्रिय साथियो! सबसे पहले हम उस स्रोत को, उद्गम को नमन करते हैं जहाँ से सारा जगत, सारी प्रकृति, सृष्टि और जीवन प्रकट हुआ है। हम सभी को जीवन मिला है इसीलिए हमें मालूम है कि हम सब जीवित हैं। नववर्ष में हम सभी को शुभकामनाएं देते हैं। स्वस्थ रहने का, शान्त रहने का और आगे बढ़ने का आदि-आदि। इस प्रकार अन्य लोग भी हमें अनेकों तरह की शुभकामनाएं देते हैं और हम उनका अभिवादन स्वीकार भी करते हैं। इसे कई बार हम औपचारिकता समझकर करते हैं। आधे-अधूरे मन से, एक परम्परा को निभाने का कार्य समझकर करते हैं और यह एक वार्षिक क्रिया-कलाप ही होकर रह जाता है।

आइए, इस वर्ष हम सभी 'सबसे पहले' स्वयं अपने आप को मिलें, अपने से बातचीत करें और अपने आप को स्वयं ही शुभकामना दें और स्वयं को आशीर्वाद भी दें। हम अपने लिए जो भी कदम उठाएंगे, कार्य करेंगे वह हृदय की आवाज ही होगी। हृदय की आवाज हमेशा सत्य एवं शुद्ध ही होती है। सच्चे, शुद्ध एवं निर्मल मन से जो भी हम अपने लिए चाहते हैं हमें उसी शुद्ध, सत्य एवं निर्मल भाव से सभी को शुभकामना देनी है। हमने इसे मात्र औपचारिकता नहीं बनने देना। यह कदम हमें स्वयं उठाना होगा और बाकी सब भी इस तरंग में तरंगित हो जाएंगे। हमारा जो भी कार्य होगा वह हमारे होश से, जाग्रति से, विवेक से निकलेगा न कि बेहोशी से, सोये-सोये और अधूरे मन से।

हम हैं तो जीवन है और हम नहीं होंगे तब भी हमारे विवेकपूर्ण, होशपूर्वक कार्य अपने-आप प्रकाशित होते रहेंगे। सूर्य रोशनी देता है। पेड़ फल देते हैं। फूल सौन्दर्य और खुशबू बिखेरते हैं। वे कोई औपचारिकता नहीं निभाते। वे यह भी नहीं सोचते कि कोई इनका प्रयोग करता भी है या नहीं। वे अपने-अपने स्वभाव में स्थित होते हैं। हमें भी अपने स्वभाव को इस योग्य बनना होगा कि स्वयं को भी प्रकाशित करें और पूरी मानवता को भी। इसी हार्दिक भाव के साथ हँसती दुनिया परिवार की ओर से नववर्ष का अभिवादन।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 245

पिस जान्दा ए चक्की विच जो आप मुहारा हो जान्दा ए।
ओह बच जान्दा जेहड़ा दाणा किल्ली नाल खलो जान्दा ए।
दुख सुख दे इस चक्कर अंदर हर कोई चकरांदा ए।
ऊंच नीच विच घिरया रहन्दा हर कोई ठुकरांदा ए।
पर जो गुर चरनां विच आ जाए होर ठिकाणा भाले ना।
कहे अवतार ओह जान नूं अपणी चौरासी विच गाले ना।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जीवन के गूढ़ रहस्य लोगों की समझ में आसानी से नहीं आते।

जीवन में क्या करना ठीक है और क्या करना परेशानी का कारण बन सकता है, इसका आभास इन्सान को सहजता से नहीं होता। यही कारण है कि इन्सान अपने मन के अनुसार उचित-अनुचित कार्य करता चला जाता है और हमेशा परेशानियों से घिरा नज़र आता है।

चौरासी लाख योनियों का चक्र जीव को अनन्त समय तक जन्म-मरण में डाले रखता है। यह चक्र उसे लगातार परेशान करता है। सन्त-महापुरुष संसार के लोगों की परेशानी दूर करने का सहज उपाय बताते हैं और उनका नाता परमपिता-परमात्मा से जोड़ देते हैं। फिर वह इन्सान मन की मत पर न चलकर गुरु की मत पर चलता है और सदैव के लिए सुखी हो जाता है। अपनी मर्जी से जो मन में आया वो करने वाला इन्सान कभी चैन नहीं पाता। मनमर्जी करने वाला चक्की में पड़े दानों की भांति पिस जाता है लेकिन जो दाना चक्की की कीली के साथ जुड़ा रहता है वह समय की चक्की में पिसने से बच जाता है। यह संसार चक्की के दो पाटों की तरह है। चक्की दिन-रात चल रही है, इसके बीच में जो भी आया वह बच नहीं पाया। कीली के साथ जुड़े रहना ही बचाव का उपाय है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जीवन में सुख और दुख लगातार आते-जाते रहते हैं। इनमें से कोई भी लम्बे समय तक साथ नहीं रहता, न सुख हमेशा रहता है और न दुख। सुख-दुख के चक्कर में हर इन्सान चकरा जाता है और उसका पूरा जीवन कष्टों-परेशानियों में बीत जाता है।

मानव की इस समस्या का समाधान बताते हुए बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि संसार के झूठे सहारों में सुख की तलाश करना व्यर्थ है। जो इन्सान अन्य ठिकानों की खोज में समय व्यर्थ करने की बजाय सद्गुरु के चरणों का आसरा ले लेता है, वह सहज ही सुखी हो जाता है। उसका जीवन शांत और सहज हो जाता है। वह सद्गुरु से ब्रह्म को जानकर मुक्त अवस्था प्राप्त कर लेता है। सद्गुरु की शरण में आकर वह चौरासी लाख योनियों में चक्कर खाने से सहज ही बच जाता है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

- हमें यह ब्रह्मज्ञान भ्रमों और विकारों से निजात प्राप्त करने के लिए प्रदान किया गया है। यदि अब भी हम भ्रमों में फंसे हैं तब इस ज्ञान का कुछ भी लाभ नहीं है।
- हम जो बोलते हैं या दूसरों को उपदेश देते हैं वह शब्द और भाव पहले हमारे जीवन में परिलक्षित होने चाहिए। वे हमारे किरदार (चरित्र) का हिस्सा होने चाहिए।
- संतोष का अर्थ यह नहीं कि हम कर्म करना ही छोड़ दें। निरंकार ने हमें कर्म करने की आजादी भी दी है। अपना कर्म पूरी मेहनत और विवेक से करना है परन्तु उसके परिणाम को इस निरंकार पर छोड़ देना है।
- अपने किरदार को सदैव स्वयं सुधार की ओर लेकर जाएं। विकारों को अपने किरदार से दूर करें। पहले तो मनुष्य केवल जाति, भाषा, खान-पान के आधार पर दूसरों को नीचा समझकर नफरत करता था किन्तु अब और नये-नये आधार बना लिए गए हैं।

– सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

- यदि तुम अज्ञानता के कारण भगवान को नहीं देख सकते तो इसका कारण यह नहीं कि भगवान नहीं है।

– रामकृष्ण परमहंस

- सन्त का जीवन मक्खन की तरह होता है। यदि किसी को आँच लगती है तो सन्त को भी उसकी आँच लगने से हृदय पिघल जाता है। – तुलसीदास
- संसार आपको वही कुछ समझता है जो आप खुद को समझते हैं। – स्वेट मार्डेन
- मनुष्य के अतिरिक्त इस संसार में और कोई वस्तु विशेष नहीं है परन्तु हर एक को यह बात समझाना कठिन है।

– उमर खैय्याम

- यदि कोई मनुष्य कहता है कि मैं ईश्वर से प्रेम करता हूँ परन्तु वह अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है।
- वह वीर नहीं है जो हजारों को जीतता है, वीर वह है जो मन को जीतता है।
- पैसे से सुख-साधन खरीद सकते हैं पर शान्ति नहीं।
- व्यवहार वह आईना है जिसमें हर किसी का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है।
- जीने के लिए खाना अच्छा है परन्तु खाने के लिए जीना महापाप है। – अज्ञात

– संकलन : श्रीराम प्रजापति

कविता : डॉ. बच्चन पाठक

आया है नववर्ष

आया है नववर्ष साथियों,
आया है नववर्ष।
उन्नति हो अपने भारत की,
हम सब उठें बढ़ें सहर्ष।।

हम भारत के नन्हें सैनिक,
आगे बढ़ते जायेंगे।
हिमगिरि की दुर्गम चोटी पर,
देश का ध्वज फहरायेंगे।।

साहस के हम काम करेंगे,
पूरे जग में नाम करेंगे।
पहले हम कर्तव्य करेंगे,
फिर पीछे आराम करेंगे।।

बेकारी, भूखमरी मिटेगी,
हम ऐसा उपाय करेंगे।
सारे भारतवासी अपने,
हम सबसे सहयोग करेंगे।।

नया साल कहता है हमसे,
कभी नहीं घबराना।
अन्यायी हो लाख बली,
पर कभी न शीश झुकाना।।

होवे भारत का उत्कर्ष।
स्वागत है तेरा नववर्ष।

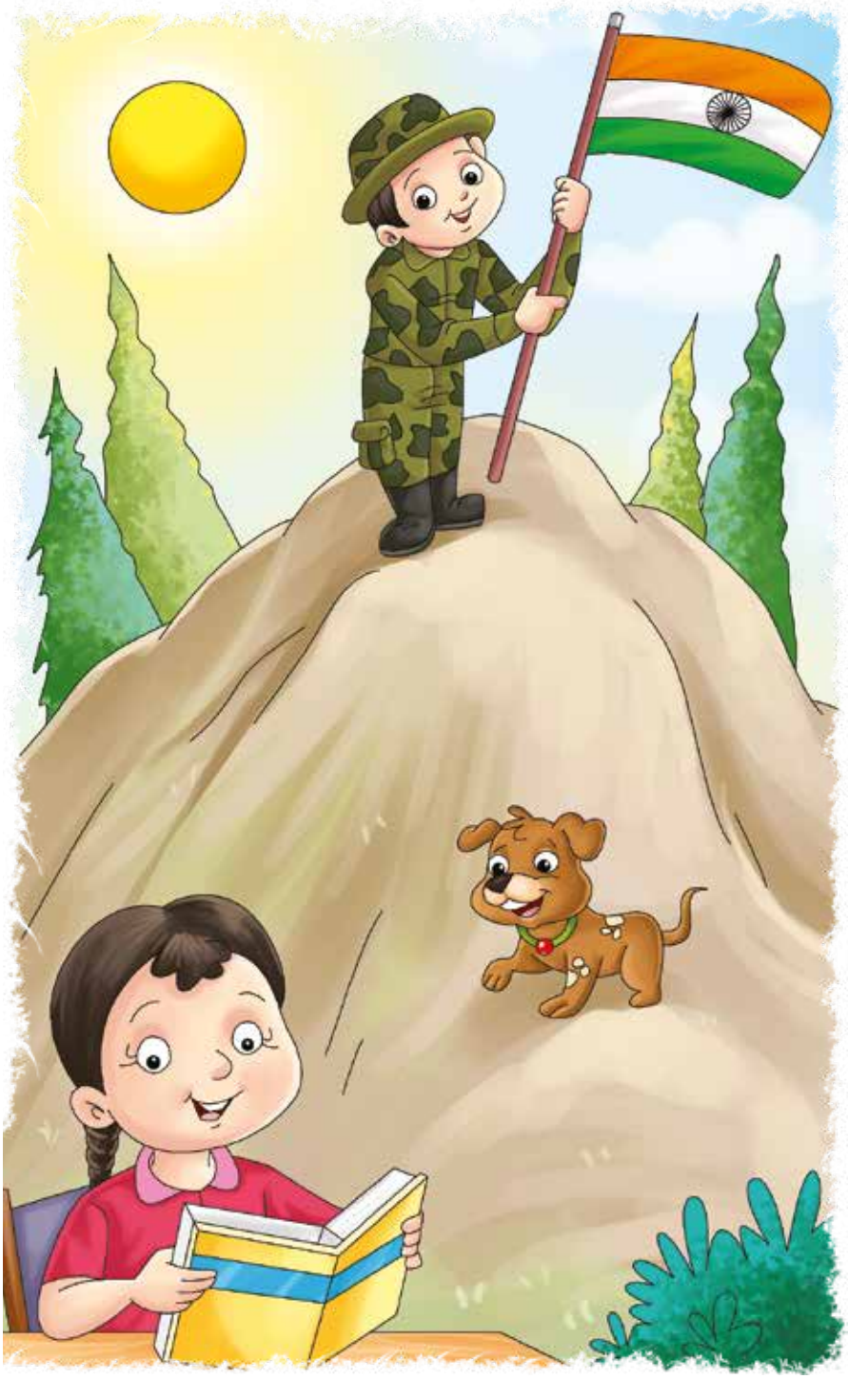

नववर्ष पर विशेष जानकारी : अर्चना जैन

खुशियों के रंग ...

नववर्ष पूरे विश्व में हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन कहीं आतिशबाजी की जाती है तो कई जगह नाच-गान के दौर चलते हैं तो कहीं धार्मिक भजन गाये जाते हैं। आइए, कुछ ऐसी ही प्रथाओं से आपका भी परिचय कराते हैं।

नववर्ष के दिन ऑस्ट्रेलिया में कंगारू को देखना शुभ मानते हैं। कहते हैं कि इसे देखने से धन में वृद्धि होती है। जीवन में खुशहाली आती है। नये-नये दोस्त बनते हैं तथा व्यापार में हानि भी नहीं होती। इस दिन यहाँ कंगारू की कई तस्वीरें व मूर्तियां खरीदना भी शुभ समझा जाता है।

ब्राजील में इस दिन धार्मिक भजन गाने की प्रथा हैं लोग किसी देवालय में एकत्रित होकर पहले दीप जलाते हैं फिर तरह-तरह की खुशबू से देवालय को महकाते हैं। कहते हैं नववर्ष में देव भजन करने से जीवन में शान्ति बनी रहती है। कभी प्राकृतिक आपदा परेशान नहीं करती।

अमेरिका में इस दिन जगह-जगह आतिशबाजी की जाती है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक जी भरकर तरह-तरह की आतिशबाजी करते हैं। आसमान में बड़े-बड़े गुब्बारे उड़ाते हैं।

नववर्ष की भोर में जर्मनी में नृत्य-गान करने की परम्परा है। यहाँ के लोकजीवन में ऐसा विश्वास किया जाता है। नाचने से शरीर की कसरत तो होती है इससे उम्र लम्बी होती है तथा गाना गाने से जवीन में कई तरह की खुशियां हासिल होती हैं। इस दिन यहाँ आसमान में 51 तोपों की सलामी भी दी जाती है। सलामी देने का कार्य सेना के जवान करते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के आदिवासी इस दिन शिकार करना पाप समझते हैं। वे इस दिन जंगल में घायल पशु-पक्षियों का इलाज करते हैं तथा वृक्षारोपण भी करते हैं।

कांगों के आदिवासी इस दिन परिन्दों को पकड़कर आसमान में उड़ाते हैं। उनका विश्वास है कि ऐसा करने से हर मौसम का चक्र सही रहता है तथा फसलें भी प्रचूर मात्रा में होती हैं।

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सद्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

सुखदा मणि

एक सन्त थे। वे सदा प्रसन्न रहते थे। उनके चेहरे पर सदा उल्लास झलकता था। इसी कारण चोरों ने समझा उनके पास कोई बड़ी दौलत है। अन्यथा हर घड़ी प्रसन्न रहने का और क्या कारण हो सकता है?

अवसर पाकर चोरों ने उनका अपहरण कर लिया और वे उन्हें जंगल में ले गये और कहा– हमने सुना है, आपके पास सुखदा मणि है। इसी से इतने प्रसन्न रहते हो। उसे हमारे हवाले करो अन्यथा जान की खैर नहीं।

सन्त ने एक-एक करके हर चोर को अलग-अलग बुलाया और कहा– चोरों के डर से दूर मैंने उसे जमीन में गाड़ दिया है। यहाँ से कुछ ही दूर वह स्थान है। अपने-अपने सिर (खोपड़ी) के नीचे चन्द्रमा की छाया में खोदना मिल जाएगी। इतना कहकर सन्त पेड़ के नीचे सो गये।

चोर अलग-अलग दिशा में चले गये और जहाँ-तहाँ खोदने लगे। जरा-सा उठते तो छाया हिल जाती और उन्हें फिर खुदाई करनी पड़ती। रातभर में सैंकड़ों गड्ढे बन गये पर कहीं मणि का पता न लगा। चोर हताश होकर आये और सन्त पर गलत बात कहने का आरोप लगाकर झगड़ने लगे।

सन्त हँसे और बोले– मूर्खो मेरे कथन का अर्थ समझो। खोपड़ी तले सुखदा मणि छिपी है अर्थात् अपने श्रेष्ठ विचारों के कारण मनुष्य प्रसन्न रह सकता है। तुम भी अपना दृष्टिकोण बदलो और प्रसन्न रहना सीखो। चोरों को यथार्थ का बोध हुआ तो वे भी चोरी करना छोड़कर और अपनी आदतें सुधारकर प्रसन्न रहने की कला सीख गये। यही है सुखदा मणि।

प्रसन्न रहना सबसे बड़ा धन है, संपत्ति है।

कविता : राजकुमार 'राजन'

गणतंत्र के गीत गाएं

सबके अधिकारों का रक्षक,
अपना ये गणतंत्र पर्व है।
लोकतंत्र ही मंत्र हमारा,
हम सबको इस पर ही गर्व है।।

कांटों में भी फूल खिलायें,
इस धरती को स्वर्ग बनायें।
आओ, सबको गले लगायें,
हम गणतंत्र का पर्व मनायें।।

नीले नभ में फर-फर फहरे,
विश्व-विजयी तिरंगा प्यारा।
देश शान्ति का बने चमन ये,
चहुँ दिशा फैले उजियारा।।

खुशी मनाएं सब मिलकर के,
गणतंत्र के गीत सुनाएं।
देश की ताकत और बढ़ाने,
भेदभाव सब भूलते जाएं।।

बाल कविता : सेवा नन्दवाल

गणतंत्र

सफेद, हरा और केसरिया,
इन रंगों के सम्मिश्रण से
बना राष्ट्रध्वज प्यारा।

इसकी आन बान शान
और मान-सम्मान पर
कुर्बान सर्वस्व हमारा।

तब ही कायम रख पाएं
बेशकीमती और जरूरी
अपनी आजादी और जनतंत्र।

सब जन तक उसका लाभ
पहुँचाने हम कटिबद्ध हों
इस दिवस गणतंत्र।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
– अजय कालड़ा

माँ जी आज तो मुझे चावल साफ करने में बहुत समय लगा क्योंकि चावल में बहुत कंकड़ थे।
क्या मुझे थोड़ा और पुलाव मिलेगा।
नहीं आज पुलाव कम बना था।
लगता है हमें सुखीलाल को सबक सिखाना ही पड़ेगा। सुनो मेरे पास एक योजना (प्लान) है।

भईया, मुझे इस लिस्ट में लिखी सभी चीजें दे दो। आज घर में एक छोटी-सा कार्यक्रम है। आप भी हमारे कार्यक्रम में जरूर आइएगा।
क्या मैं जल्दी आ गया?
नहीं हम आपका ही इंतजार कर रहे थे। आइए बैठिए।
आइए खाना खाते हैं। लीजिए दाल और लिजिये।
सुखीलाल तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?
माता जी काम अच्छा चल रहा है।

आह!
क्या हुआ बेटा? चावल और लिजिए।
कुछ नहीं माँ जी। मुझे समझ आ गया आपने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है?
बेटा आपने भर पेट खाना नहीं खाया।
नहीं, नहीं माँ जी। मुझे माफ कीजिए। मैं अब कभी भी मिलावट नहीं करूंगा। मुझे सबक मिल गया।
शिक्षा : बेईमान और लालची को जैसा को तैसा मिल ही जाता है।

लघु कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

मन का मैल

कृष्णा नदी के किनारे एक महर्षि का आश्रम था। अपने शिष्यों सहित वह वहीं रहते थे। आसपास के गाँवों में उनकी काफी ख्याति थी।

साल में एक बार महर्षि गाँवों में जाकर लोगों के दु:ख-दर्द को सुनते एवं उन्हें उचित सलाह भी देते। बदले में गाँव वाले उन्हें कुछ-न-कुछ चीजें उपहार में दे दिया करते और सालों की तरह इस साल जब महर्षि गाँव में पहुँचे तो लोगों को

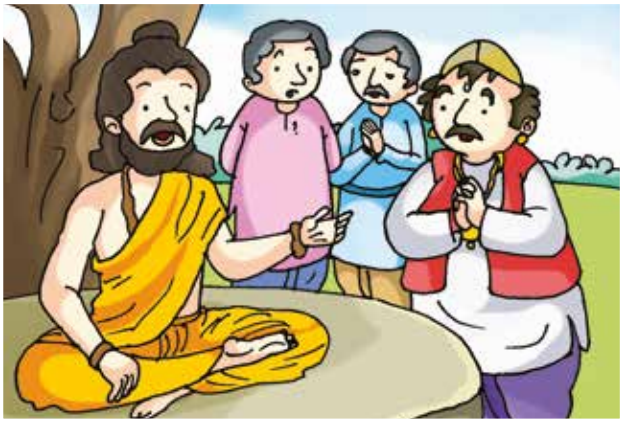

बिजली की तरह उनके आने की सूचना मिल गयी। खुली जगह में एक घने पड़े के नीचे उन्होंने अपना आसन जमाया। देखते-ही-देखते गाँव वालों की भीड़ वहाँ जमा हो गयी। एक-एक कर महर्षि सबका दु:ख-दर्द सुनने लगे। उन्हें उचित सलाह भी देते जाते। साथ ही उनके द्वारा लाए गए उपहार को स्वीकार करते जा रहे थे। काफी देर बाद जमींदार साहब सुसज्जित रथ पर सवार होकर वहाँ पहुँचे। उनके तन पर बेशकीमती वस्त्र थे। गले में मोतियों की माला एवं दोनों हाथों की अंगुलियों में हीरे जड़ित अंगुठियां थीं। रथ से उतरकर महर्षि के करीब आ उन्हें प्रणाम कर वह बोले, ''मेरे पास सभी कुछ है। मगर मन अशांत है। कुछ उपाय बताइए।''

जमींदार की क्रूरता और उसकी दुष्ट नीयत से महर्षि भली-भाँति अवगत थे। अत: वह बोले, ''अपनी मूर्खता की वजह से तुम्हारे मन में अशान्ति है।''

''कैसी मूर्खता?'' किसी तरह अपने क्रोध को दबाकर जमींदार ने महर्षि ने पूछा।

महर्षि ने पास रखे एक नारियल को हाथ में लेकर कहा, ''अगर इसका बाहरी हिस्सा साफ-सुथरा हो और अंदर का फल सड़ा हो तो इसका क्या महत्व है?''

''कुछ नहीं।''

''बाहरी हिस्सा तन है तो अंदर का फल इसका मन। तुम्हारी मूर्खता यही है कि तुमने अपने तन को तो साफ-सुथरा रखा मगर मन को सड़ा दिया। मन के मैल की वजह से ही तुम्हारे जीवन में अशान्ति है। तुमने गरीब जनता का शोषण ही नहीं किया है, उन पर अत्याचार और अन्याय भी किया है जिनसे तुम्हारा मन काफी मैला हो चुका है? मन में, जब मैल है तो वहाँ शान्ति कहाँ से, कैसे आएगी?'' महर्षि ने दो टूक बात कही।

जमींदार सहमा। फिर बोले, ''अब क्या करूँ?''

''सद्व्यवहार और परोपकर करके ही अपने मन के मैल को धोकर साफ कर सकते हो तभी सच्ची शान्ति तुम्हें मिलेगी।''

अपनी भूल का एहसास जमींदार को हो गया। उन्होंने महर्षि की बात मान ली।

कविता : गफूर 'स्नेही'

सर्दी के दिन

डराते और कंपाते,
सर्दी के दिन हैं आते।
कोहरे के जाल सूर्य को–
बहुत बहुत उलझाते।।

खा पोहे और दूध जलेबी,
चाय, दूध, कॉफी सुहाते।
बुजुर्गों का कहना है,
दिन ये तन्दुरूस्ती लाते।।

रात रजाई दो दो ओढे,
ऊनी कपड़े बहुत लुभाते।
खिड़की खुले तो दौड़कर–
बंद करें पर्दा चढ़ाते।।

ठंडी हवाओं का सामना,
कोट व कम्बल ही कर पाते।
स्वेटर, मफलर, मौजे–
हिम्मत हमें बढ़ाते।।

बाल कविता : अनिल द्विवेदी

सर्दी की ऋतु आई

ठिठुर रहे बच्चे-बूढ़े सब,
सर्दी की ऋतु आई।
तन पर बोझ बढ़ा कपड़ों का,
कैसी आफत आई।।

रुई समान घने कुहरे से,
टप-टप टपके बूंदें।
पेड़ों पर दुबके पक्षीगण,
पल-पल आँखें मूंदे।।

सूरज आँख मिचौली खेले,
व्यथित हुए जन सारे।
बड़ी-बड़ी रातें, दिन छोटे,
गायब चांद-सितारे।।

विक्रमादित्य का सिंहासन

प्राचीन समय की बात है। एक नगरी के पास वीरान जंगल था। वहाँ किसी महाराजा के विशाल राजमहल के खंडहर मौजूद थे। उन्हीं खंडहरों के निकट एक विशाल ऊँचा टीला था जिस पर घास तथा छोटे-मोटे झाड़-झंखाड़ उगे हुए थे। उस विशाल एवं ऊँचे टीले के निकट नगरी के कुछ लोग अपने पशु चराते थे। उन आदमियों के साथ कुछ बच्चे भी अपने-अपने पशुओं को वहाँ ले जाया करते थे। बच्चे आपस में वहाँ खेलते थे।

इसी प्रकार एक दिन कुछ बच्चे वहाँ खेल रहे थे कि लगभग 10 वर्ष का एक बच्चा खेलता हुआ उस टीले की चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ बैठकर गंभीर आवाज में अपने साथियों से बोला– ठहरो! मैं तुम्हारा राजा हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। मैं तुम्हारा न्याय करूंगा। वे सभी बच्चे हैरानी से उसे देखने लगे। उनमें से कुछ के मन में विचार आया– अरे! पुनीत को अचानक क्या हुआ? जबकि पुनीत नामक वह बच्चा उसी कठोर लहजे में बोला– तुम मुझे अपनी समस्या बताओ। मैं तुम्हारा इन्साफ करूंगा।

वे बच्चे झूठ-मूठ का झगड़ा करके उसके सामने पेश हुए तो उस बच्चे ने बिल्कुल सही न्याय कर दिया। ऐसा काफी दिनों तक होता रहा। वह बच्चा जब भी उस टीले की चोटी पर बैठता, उस पर कोई अदृश्य दैवीय शक्ति अपना कब्जा कर लेती। धीरे-धीरे वह बच्चा वास्तविक झगड़ों का निपटारा भी करने लगा। गाँव व आसपास के नगरों में जब भी कोई विवाद छिड़ता था समस्या उत्पन्न होती तब लोग उस बच्चे को उसी टीले पर बैठा देते तथा बच्चा बिल्कुल सही फैसला सुनाता। उस बच्चे की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

उस ख्याति को कुंतलपुर के महाराज कर्णसिंह ने भी सुना तो उनके मन में टीले का रहस्य जानने की इच्छा कुलबुला उठी। वह अपने सेनापति

एवं कुछ सैनिकों के साथ टीले के पास पहुँचा। पहले उसने उसी बच्चे को टीले पर बैठाकर अपने मन की तसल्ली की। महाराजा कर्णसिंह को यह समझते देर न लगी कि जो कुछ है इस टीले के नीचे दफन है। टीले को खोदने के लिए उसने अपने सैनिक लगा दिए। कुछ देर बाद वहाँ से एक सिंहासन प्राप्त हुआ। उस सिंहासन को बाहर निकाला गया। मिट्टी साफ की गई। तब सभी ने देखा कि उस सिंहासन को 24 फरिश्ते अपने पंखों पर उठाए हुए थे।

मैं इस सिंहासन पर बैठकर इन्साफ किया करूंगा। अब यह सिंहासन सिर्फ मेरा है। ऐसा सोचकर महाराजा कर्णसिंह उस सिंहासन को अपने साथ अपनी राजधानी में ले गए। उस सिंहासन को जाते देखकर पुनीत नामक वह बच्चा मन ही मन उदास हो गय। मानो उसके हाथ से उसका प्रिय खिलौना छीन लिया हो। वह भीगी आँखों से सिंहासन को अपने से दूर जाते देखता रहा।

महाराजा कर्णसिंह ने उस सिंहासन को पूरे सम्मान के साथ अपने दरबार में स्थापित कर दिया। सारा राजदरबार प्रजाजनों एवं शाही सदस्यों से खचाखच भरा था। राजा कर्णसिंह अभिमान में चूर होकर सिंहासन की तरफ चले तो एक फरिश्ते की आवाज आई– ठहरो! इस सिंहासन पर बैठने योग्य तुम नहीं हो।

–क्यों?

–क्योंकि यह राजा वीर विक्रमादित्य का सिंहासन है। इस पर वही बैठ सकता है जिसका मन साफ हो। क्या तुम्हारा मन साफ है?

–नहीं।

–तो जाओ। एक हफ्ते बाद आना, जब तुम्हारा मन साफ हो जाए।

इतना कहकर फरिश्ता उड़ गया। सिंहासन के नीचे 23 फरिश्ते रह गए। राजा कर्णसिंह अपमानित सा वापिस मुड़ गया।

एक हफ्ते के बाद कर्णसिंह उस सिंहासन पर बैठने की लालसा लिए हुए उस तरफ चला तो दूसरा फरिश्ता बोला– ठहरो! तुम इस पर बैठने के लायक नहीं हो।

–क्यों?

–क्या तुम्हारा क्रोध पर काबू है?

–नहीं।

–तो तुम इस सिंहासन पर नहीं बैठ सकते। पहले तुम अपने क्रोध पर काबू करो तब एक हफ्ते बाद आना। इतना कहकर वह दूसरा फरिश्ता भी उड़ गया। अब 22 देवदूत बाकी रहे।

इसी प्रकार राजा कर्णसिंह के दोष गिनाते हुए 23 फरिश्ते उड़ चुके थे। अब केवल एक ही फरिश्ता उस सिंहासन को अपने मजबूत पंखों पर उठाये हुए था। राजा कर्णसिंह मन ही मन में खुश था कि आज यह सिंहासन मेरा हो जाएगा। ऐसा विचार कर वह सिंहासन की तरफ चल दिया।

तभी वह आखिरी फरिश्ता भी चेतावनी भरे स्वर में बोला– ठहरो राजन! यह महाराजा विक्रमादित्य का पवित्र सिंहासन हैं इस पर तुझ जैसा भ्रष्ट राजा कदापि नहीं बैठ सकता।

–क्यों?

–तुम अपने गिरेबान में झांककर देखो व सोचो अपनी अन्तर्आत्मा से कि क्या तुम उस मासूम बच्चे की तरह कोमल, निरोल, निर्लेप व स्वच्छ हृदय हो जो कि निष्कपट एवं निष्काम भाव से वह बच्चा प्रजा का न्याय करता था। क्या तुम उस बच्चे की तरह निर्वैर हो? ईर्ष्या द्वेष से परे हो? छोटे-बड़े की भावना से दूर हो?

राजा कर्णसिंह लज्जित होकर बोला– नहीं, मैं उस मासूम बच्चे जैसा नहीं हूँ।

–तुम इस पर बैठने लायक नहीं हो। इस पर बैठने लायक वास्तव में वो ही बच्चा है।

(इतना कहकर वह फरिश्ता उस पवित्र सिंहासन को लेकर उड़ गया।)

सच में यदि हमें अपने जीवन में परम अवस्था प्राप्त करनी है तो विकारों से दूर होना होगा।

आलेख : कमल सौगानी

जल की रानी का रंग-बिरंगा संसार

संसार भर में मछलियों की 4500 से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये मछलियां मक्खी के आकार से लेकर 60-65 मीटर तक लम्बी भी होती हैं जो दुनिया की विभिन्न जलवायु के मुताबिक भिन्न-भिन्न जलाशयों में पाई जाती हैं। औसतन मछली श्याम-श्वेत होती है। लेकिन विभिन्न प्रजातियों की मछलियां भिन्न-भिन्न रंग रूप की भी होती हैं। दक्षिण अमेरिका के जलाशयों में सुर्ख चटक लाल रंग की मनमोहक प्यारी-प्यारी मछलियां तैरती दिखाई देती हैं। वैसे इनके रंग लाल, गुलाबी, केसरिया, नीले, हरे, कत्थई, बैंगनी, पीले, भूरे आदि होते हैं जिनकी नन्ही-नन्ही आँखें हीरे की तरह दमकती रहती हैं।

वैसे मछलियों की कुछ प्रजातियां जहरीली भी होती हैं। चीन व ब्राजील की नदियों में ऐसी मछलियों की भरमार अधिक है। कुछ मछलियां

जल की घनी वनपस्तियों में ही अजीब तरह के घोसले बनाकर रहना पसन्द करती हैं। कुछ मछलियां तो उड़ने वाली भी होती हैं जो पानी की सतह पर तैरते-तैरते अचानक 8-10 फुट तक की ऊँचाई पर उड़ती हैं। फिर सीधे जल में डुबकी लगाकर फिर से उड़ती हैं, ऐसा वे कई बार करती हैं जबकि इन मछलियों के पंख नहीं होते। उड़ने वाली ये मछलियां अक्सर नील नदी में ज्यादा दिखाई देती हैं। पनामा नहर में भी उड़ने वाली मछलियों की कई प्रजातियां हैं।

आर्करा मछली

नुकीले कांटों वाली मछली जिसे 'सेही' की सहेली भी कहा जाता है। कोरिया की गहरी ठंडी नदियों में पाई जाती है। ये अपने शरीर के नुकीले कांटों से अपने शिकार को घायल कर फिर उसे अपना भोजन बनाती है।

आर्करा मछली तो विचित्र ढंग से शिकार करती है। यह छोटे-छोटे समुद्री पौधों पर लटके हुए कीड़े और मक्खियों पर थूककर उन्हें बड़ी तरकीब से पानी में गिरा देती है फिर झपटकर उन्हें चट कर जाती है। यह मछली पेड़-पौधों पर बैठे कीड़ों पर कैसे थूकती है? यह बड़ी रोचक प्रक्रिया है। इसके मुँह के ऊपरी हिस्से में एक लम्बी नली जैसी संरचना हाती है। जिससे पानी थूक के रूप में सीधे एक रेखा के रूप में बाहर आता है। इसका निशाना बहुत सही और अचूक होता है। यह लगभग दो मीटर की दूरी तक के कीड़ों को आसानी से अपना शिकार बना लेती है। वैसे इस मछली की लम्बाई पौन इंच होती है। यह इंडोनेशिया के जलाशयों में पाई जाती है।

पानी में गंध छोड़कर शिकार करने वाली मछली को 'ओयि' नाम से जाना जाता है। फुट भर लम्बी यह मछली कत्थई काले रंग की होती है। जब इसे भूख सताती है तो यह पानी में एक तरह की गंध छोड़ती है। जिस कारण कई नन्हे-नन्हे कीट इसकी तरफ आकर्षित हो चले आते हैं और ये तुरन्त उन्हें दबोच लेती है।

'ओयि'

प्रेरक-प्रसंग : आर. डी. भारद्वाज

उपकार का बदला

बहुत समय पहले की बात है, स्कॉटलैंड में एक किसान रहता था, जिसका नाम था ह्यूज़ फ्लैमिंग। एक दिन जब वह अपने खेतों में काम निपटाकर, शाम को घर जाने की तैयारी कर रहा था तो अचानक उसे किसी के चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ीं। उसने आवाज़ आने की दिशा में ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की तो पता चला कि एक बच्चा मदद के लिए चीख-पुकार कर रहा है। शाम का वक्त था। सूर्य अस्त हो रहा था और थोड़ा-थोड़ा अन्धेरा भी हो रहा था। खैर, वो आवाज़ आने की दिशा में आगे बढ़ता गया। उनके खेतों के बाद थोड़ा दलदल का इलाका था और उसके बाद जंगल शुरू हो जाता था। दलदल के इलाके में पहुँचकर उसने देखा कि एक 9-10 साल का बच्चा दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है और वह मदद के लिए चीख रहा था। वह लड़का बुरी तरह से रो रहा था और डरा हुआ भी था।

फ्लैमिंग ने लड़के को देखकर उसे हिम्मत दी और कहा, 'डरो नहीं, मैं तुम्हें बचाऊँगा।' यह कहते हुए वह लड़के की तरफ दलदल में आगे बढ़ने लगा। लेकिन अभी वह थोड़ी ही दूर गया तो उसे एहसास हुआ कि दलदल तो बहुत गहरा है। अगर वह आगे बढ़ा तो शायद वह भी उस लड़के की तरह उसमें फंस जाएगा। लड़का भी उसे देखकर खुश हो गया कि आखिरकार उसे बचाने वाला कोई आ गया है और यह यथासम्भव यत्न भी कर रहा है। लेकिन फ्लैमिंग ने वहीं रूककर थोड़ी देर के लिए सोचा कि अपनी जान को खतरे में डाले बिना लड़के को कैसे बचाया जा सकता है? फिर जैसे कि उसे कोई युक्ति सूझ गई हो, वह लड़के से कहने लगा, 'देखो बेटा! तुम डरना नहीं, रोना नहीं। मैं तुझे बचाने के लिए कोई न कोई इंतजाम करके 5-7 मिनट में वापस आता हूँ।'

फ्लैमिंग जल्दी-जल्दी वापिस अपने खेतों की ओर भागा। खेतों में उसने अपने जानवरों के लिए एक कच्चा मकान बना रखा था। अपने मकान में पहुँचकर उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई। अचानक उसकी नज़र एक लम्बी रस्सी पर पड़ी। फ्लैमिंग ने तुरन्त रस्सी उठाई और वापस दलदल

में फंसे उस लड़के की तरफ दौड़कर गया और लड़के से कहने लगा, 'मैं यह रस्सी तुम्हारी तरफ फैंकता हूँ, तुम इसका दूसरा सिरा पकड़ लेना, ठीक है।'

लड़के ने 'हाँ' में अपना सिर हिलाया। फ्लैमिंग ने फिर पूरे जोर से रस्सी का दूसरा सिरा लड़के की ओर फेंका। लड़के ने किसान के कहे अनुसार रस्सी के सिरे को कसकर पकड़ लिया। दूसरी ओर फ्लैमिंग उसे धीरे-धीरे खींचने लगा। ऐसे करते-करते 4-5 मिनट की कोशिश के बाद फ्लैमिंग ने लड़के को दलदल से बाहर निकाल लिया। अगर वह लड़के को दलदल से बाहर न निकालता तो न जाने लड़के का क्या हश्र होता क्योंकि उस दलदल में कई प्रकार के खतरनाक जानवर भी थे और दलदल के पीछे तो जंगल था ही, जो कि जंगली जानवरों से भरा पड़ा था।

दलदल से निकालने के बाद फ्लैमिंग उसे अपने खेत में ले गया और जाकर उसके और अपने कपड़े जो कि दलदल वाले कीचड़ से बुरी तरह सने हुए थे पानी से साफ किये। फिर फ्लैमिंग के पूछने पर उस लड़के ने बताया उसका नाम विन्सटन है और वह दिन में अपने 7-8 दोस्तों के साथ वहाँ घूमने आया था ताकि वह गाँव की सैर कर सके और जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक जीवन में रहते हुए देख सके। शाम होते-होते बाकी सभी उनके साथी तो निकलकर चले गये लेकिन वह वहाँ पर दलदल वाले कीचड़ में फंस गया।

बातें करते-करते फ्लैमिंग ने लड़के को उसके घर पहुँचाया और देर रात वह अपने घर पहुँचा। इस घटना को 10-12 दिन ही हुए थे कि एक दिन शाम को उसके घर के सामने एक गाड़ी आकर रूकी। फ्लैमिंग और उसकी पत्नी थोड़ा सकते में थे क्योंकि उनके किसी भी रिश्तेदार व पारिवारिक मित्र के पास उस वक्त गाड़ी नहीं थी तो उनके घर गाड़ी में कौन आ सकता है? वे दोनों ऐसे ही विचारों में उलझे हुए थे कि दूसरे ही पल शानदार सा सूट-बूट पहने एक सज्जन उनके घर में दाखिल हुआ। दोनों वहीं खड़े एक-दूसरे का नज़रों से ही निरीक्षण कर रहे थे कि अचानक फ्लैमिंग ने सज्जन से पूछा, 'आप कौन हैं और किससे मिलना है?'

संक्षिप्त जवाब में अतिथि ने उत्तर दिया, 'फ्लैमिंग से।'

'जी फरमाइए! मैं ही फ्लैमिंग हूँ।' इतनी देर में एक लड़का भी वहाँ आ गया जिसे पहचान कर फ्लैमिंग उनके आने का उद्देश्य थोड़ा-थोड़ा

समझ गया। फ्लैमिंग की पत्नी भी उनको देखकर थोड़ा चकित थी। अतिथि और उसके लड़के को बैठाने लायक उनके घर में फर्नीचर तो था ही नहीं। बस आंगन में एक टूटी-फूटी चारपाई पड़ी थी। फ्लैमिंग की पत्नी ने उनको चारपाई पर बैठने के लिए कहा। ऐसे वे दोनों संकोच करते-करते बैठ गये। फ्लैमिंग की पत्नी उनके लिए पानी लेगर आई। तत्पश्चात् फ्लैमिंग ने उनसे अपने गरीबखाने पर पधारने का कारण पूछा और बोले,

'दरअसल, मैंने आपको पहचाना नहीं, आप कौन हैं और आपको मुझसे क्या काम है?'

अतिथि ने जवाब दिया– 'मेरा नाम रैन्डोल्फ चर्चिल है। मैं एक बिजनेसमैन हूँ। आपको याद होगा कि थोड़े दिन पहले आपने एक बच्चे की जान बचाई थी जो कि जंगल के पास वाले दलदल में फंस गया था। यह वही लड़का है, मेरा बेटा विन्सटन। आज मैं आपको इसके लिए धन्यवाद करने आया हूँ। आपने मेरे बेटे को बचाकर मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है।'

फ्लैमिंग ने जवाब में बस इतना ही कहा, 'जी वो तो मेरा फर्ज था।' बातें करते-करते रैन्डोल्फ चर्चिल ने फ्लैमिंग के घर का मुआयना भी किया। उसने देखा कि किसान का घर बहुत खस्ता हाल में है लेकिन उस किसान परिवार में सबर-संतोष की कमी नहीं है। फिर रैन्डोल्फ ने अपने कोट की जेब से नोटों की गड्डी निकाली और फ्लैमिंग की तरफ बढ़ाते हुए बोला– 'मेरी तरफ से आपके लिए एक छोटा-सा शुकराना है, स्वीकार करें।' पैसे देखकर फ्लैमिंग का मन गरीबी के बावजूद भी डोला नहीं और उसने जवाब दिया– 'आपका यह शुकराना मैं स्वीकार नहीं कर सकता। जो कुछ मैंने किया वह तो केवल वक्त का तकाज़ा था सो मैंने तो केवल हालात के अनुसार अपना फर्ज़ निभाया है।'

रैन्डोल्फ चर्चिल ने बड़ी कोशिश की कि फ्लैमिंग उसका तोहफा कबूल कर ले लेकिन वो नहीं माना। उसे मन ही मन बहुत बुरा लग रहा था कि उस गरीब किसान को पैसे की कितनी सख्त जरूरत है लेकिन फिर भी वह पैसे लेने के लिए तैयार नहीं हुआ। इतने में उस घर में एक 8-9 वर्ष का लड़का दाखिल हुआ जो कि फ्लैमिंग की ही तरह फटे-पुराने कपड़ों में था और उसके पैरों में कोई जूता भी नहीं था। लड़के को देखकर सज्जन ने पूछा, 'यह आपका बेटा है क्या?'

किसान ने उत्तर दिया– 'जी हाँ, यह मेरा बेटा अलेक्जेंडर है।' फिर रैन्डोल्फ ने दुबारा पूछा, 'किस कक्षा में पढ़ता है?' लड़का खामोश खड़ा रहा लेकिन फ्लैमिंग ने जवाब दिया– 'जी मैं तो एक गरीब किसान हूँ, बेटे को स्कूल भेजने की हममें हिम्मत कहाँ है?'

सज्जन ने दूसरा सवाल किया, 'तो यह लड़का सारा दिन क्या करता है?'

फ्लैमिंग ने जवाब दिया– 'अभी तो यह छोटा बच्चा है, इधर-उधर खेलता रहता है। जब 15-16 वर्ष का हो जाएगा तो मेरे खेतों के काम में हाथ बटाएगा।'

सुनकर वह अतिथि सज्जन खड़ा हो गया फिर मन ही मन थोड़ा गम्भीर मुद्रा में सोचते हुए वह लड़के के पास गया और उसने लड़के के सिर पर हाथ फेरा और बोला– 'इसके लिए मेरे पास एक सुझाव है। अगर आपको विश्वास हो तो मैं इसे अपने पास ले चलता हूँ। मेरा लड़का, जिसकी आपने जान बचाई थी– विन्सटन, मैं इसे उसी के साथ स्कूल में दाखिल करवा दूंगा। उसे उच्च शिक्षा दिलवाऊँगा ताकि इसकी जिन्दगी संवर सके। आपसे यही निवेदन है कि आप न मत कहना।'

चर्चिल की बातें सुनकर फ्लैमिंग व उसकी पत्नी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। फिर उन्होंने उस सज्जन के ज्यादा आग्रह करने पर अपने लड़के को उसके साथ भेजने हेतु तैयार हो गए। इस तरह रैन्डोल्फ चर्चिल, अलेक्जेंडर को अपने साथ ले गया। उसे मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। ऐसे करते-करते उस लड़के ने सेंट मेरीज़ हॉस्पिटल मेडिकल स्कूल से उच्च शिक्षा प्राप्त की और एक उच्च कोटि का वैज्ञानिक बन गया जिसे आज हम सर अलेक्जेंडर फ्लैमिंग (1881-1955) के नाम से जानते हैं। यह वही वैज्ञानिक अलेक्जेंडर फ्लैमिंग है जिसने 1928 में पेनिसिलिन मेडिसिन की खोज की थी और इसके लिए 1945 में उसे नोबेल पुरस्कार मिला था। बहुत वर्ष बाद वह लड़का, जिसे फ्लैमिंग ने बचाया था। बड़ा होने पर वह एक बार 1943 में बहुत बुरी तरह बीमार पड़ गया, दरअसल उसे निमोनिया हो गया था और जिस दवाई के कारण उसकी जान बच पाई थी, वह पेनिसिलिन ही थी। जिसकी खोज 1928 में अलेक्जेंडर फ्लैमिंग ने की थी और विन्सटन चर्चिल (1874-1965) वही आदमी है जो कि बड़ा होकर इंग्लैंड की कन्जर्वेटिव पार्टी का लीडर बना था। वह एक अच्छा लेखक भी रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के समय (1939-1945) के दौरान वह इंग्लैंड का प्रधानमंत्री था। एक बार वह (1951-55) की अवधि के लिए भी वहाँ का प्रधानमंत्री रहा। यही नहीं, उसे 1953 में साहित्य में बेहतरीन योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया।

प्रस्तुति : राधा नाचीज

पहेलियां

1. हरे रंग की उसकी पोशाक,
बैठा है सबसे ऊँची शाख।
कुतर-कुतर कर फल खाता है,
टे-टे करके उड़ जाता है।।

2. एक पांव का काला मेढक,
वर्षाकाल में आता।
बहुत बरसता है जब पानी,
उपयोगी मैं बन पाता।।

3. जितनी ज्यादा सेवा करता,
उतना घटता जाता हूँ।
सभी रंग का नीला-पीला,
पानी के संग भाता हूँ।।

4. मेरे पेट में रहे अंगुली,
सिर पर रखा पत्थर।
गोल-गोल रूप है मेरा,
बूझो जल्दी उत्तर।।

5. रंग है उसका पीला,
तपाया है तो ढीला।
पीटा है तो फैला,
कीमती है तो छैला।।

6. उसको सूरज कभी न भाय,
अंधियारे में निकसत पाय।
ज्यों-ज्यों सांप ताल को खाय,
सूखे ताल सांप मर जाय।।

7. एक नारी की दो औलादें,
दोनों का एक ही रंग।
एक चले और दूजा सोवे,
फिर भी दोनों रहती संग।।

8. जन्में रहे पतली डाल,
बदन का रंग हरा।
सिंगार का साधन यह,
रगड़ हाथ में रंग भरा।।

9. सिर पर सिकुड़ी, आगे छितरी,
हर घर में है साजा।
शान से चलती धूल उड़ती,
करती काम यह ताजा।।

10. एक पुरुष का अचरज भेद,
हाड़-हाड़ में छेद।
मोहि अचम्भा आवे ऐसे,
जीव बसे है इसमें कैसे।।

11. भूमि को करूं उपजाऊं,
बिना आंख के ही चल पाऊं।
गर्मी में न आऊं नजर,
धरती तो है मेरा घर।।

12. लम्बा तन और बदन है गोल,
मीठे रहते मेरे बोल।
तन पर मेरे होते छेद,
भाषा का मैं करूं न भेद।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।)

कविता : घमंडीलाल अग्रवाल

मेरा देश

प्यारा प्यारा मेरा देश,
सजा-संवारा मेरा देश।
दुनिया जिस पर गर्व करे-
नयन-सितारा मेरा देश।।

चांदी-सोना मेरा देश,
सफल सलोना मेरा देश।
सूरज जैसा आलोकित-
सुख का कोना मेरा देश।।

फूलों वाला मेरा देश,
झूलों वाला मेरा देश।
गंगा-युमना की माला का-
फूलों वाला मेरा देश।।

आगे जाए मेरा देश,
नित मुस्काए मेरा देश।
इतिहासों में बढ़-चढ़कर-
नाम लिखाए मेरा देश।।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

हमारा भारतवर्ष

गाँव-गाँव और शहर-शहर में,
घर घर दीप जलाऊँगा मैं।
सब दुखियों की सेवा करके,
अपना फर्ज निभाऊँगा मैं।।

ऊँच-नीच का भेद नहीं हो,
सबको अब मिलकर रहना है।
मुसीबत में हैं सदा साथ हम,
संकट आये तो भी सहना है।।

आगे बढ़ते चलें सदा हम,
पीछे न हो देश हमारा।
जगतगुरु, सोने की चिड़िया,
फिर हो भारतवर्ष हमारा।।

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन

आग उगलता पहाड़ है ज्वालामुखी

ज्वालामुखी उन प्राकृतिक विपदाओं में से है जिस पर हमारा विज्ञान अब तक काबू नहीं पा सका है। भूकम्प की तरह ज्वालामुखी भी पृथ्वी की आन्तरिक उथल-पुथल का नतीजा है। जब किसी ज्वालामुखी में अचानक विस्फोट होता है तो आसमान को छूती आग की लपटें धुएं के बादल कई प्रकार की विषैली गैसों के साथ पिघली हुई गर्म लाल चट्टानें लावे के रूप बह निकलती हैं और आसपास के क्षेत्रों मे बर्बादी का तांडव-नृत्य करने लगती हैं।

ज्वालामुखी क्या है? इसका निर्माण कैसे और किन परिस्थितियों में होता है? इनके विस्फोट के कारण क्या हैं? इन सभी प्रश्नों का जवाब तलाशने के लिए हमें पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में समझना होगा। यह पृथ्वी, जिस पर हम रहते हैं, मोटाई में तीन स्तरों में बंटी है। इसके सबसे ऊपरी भाग को 'क्रस्ट' कहा जाता है। 'क्रस्ट' मुख्यत: रेत व मिट्टी का बना है। इसके नीचे वाली परत को 'मेटल' कहा जाता है। यह भाग लोह-तत्वों और मैग्नीशियम युक्त ठोस चट्टानों का बना होता है। सबसे निचले भाग को 'कोर' के नाम से जाना जाता है। इस भाग में मुख्य रूप से लौह और निकेल रहता है।

पृथ्वी की ऊपरी सतह क्रस्ट मुख्यत: सात बड़ी और अनगिनत छोटी प्लेटों से मिलकर बनी है। धरती निरन्तर अपनी धुरी पर घूमती रहती है। इस दौरान ये प्लेटें धीरे-धीरे अपने स्थान से खिसकती रहती हैं। इस प्रक्रिया में इन प्लेटों में आपसी टकराव होता है। परिणामस्वरूप पृथ्वी के अन्दर दबाव बढ़ जाता है और घर्षण से उत्पन्न हुई असीम ऊर्जा स्थान के अभाव में नीचे की ओर प्रवाहित होने लगती है। इस ऊर्जा की तेज शक्ति इतनी अधिक होती है कि यह निचले स्तर पर स्थित ठोस चट्टानों को पिघला देती है। चट्टानों के इस पिघले हुए स्वरूप को मैग्मा कहा जाता है। इसमें भाप, कार्बन डाईऑक्साइड, हाइड्रोजन, सल्फाइड आदि घातक गैसें भी भरी रहती हैं। यह मैग्मा भीतरी दरारों से होकर ऊपर की तरफ बढ़ने लगता है फिर यह पृथ्वी की सतह से कोई तीन-चार मील नीचे पहुँचकर किसी स्थान पर इकट्ठा होंने लगता है। पृथ्वी की ऊपरी सतह की प्लेटों के घर्षण से नीचे स्थित मैग्मा रूपी लावे में दबाव बढ़ने लगता है। जब यह अपने चरम-बिन्दु पर जा पहुँचता है तो यह लावा पृथ्वी का सीना फाड़कर विस्फोट के साथ बाहर निकलता है और बहने लगता है। विस्फोट

में इस सुलगते और उबलते लावा के साथ राख व धुएं के बादल और विषाक्त गैसें भी निकलकर पूरे वातावरण पर छा जाती हैं।

ज्वालामुखी के निर्माण की प्रक्रिया हजारों लाखों वर्षों तक चलती रहती है। पृथ्वी के भीतरी भाग का तापमान प्रति सौ फीट नीचे जाकर एक डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ता जाता है। ऐसी स्थिति में कुछ गहराई के बाद सभी चट्टानों का तरल अवस्था में होना अनिवार्य है किन्तु स्थिति यह है कि जिस प्रकार गहराई के साथ तापमान भी क्रमशः बढ़ता जाता है उसी प्रकार गहराई के साथ दबाव भी बढ़ता जाता है। यह दबाव चट्टानों को ठोस शक्ल में बनाये रखता है। जब किसी परिस्थिति या कारण से यह दबाव कुछ कम हो जाता है तब उस स्थान की चट्टानें पिघलकर मैग्मा का रूप धारण कर लेती हैं और प्रक्रिया पूरी होते ही ज्वालामुखी के विस्फोट के रूप में फूट पड़ती हैं।

आज से अरबों वर्ष पूर्व हमारी यह धरती आग का धधकता हुआ गोला थी। धीरे-धीरे जब यह ठंडी होने लगी तो इसका ऊपरी हिस्सा जमकर ठोस हो गया किन्तु इसकी भीतरी परतें प्रचण्ड आग की तरह दहकती रही। जब आंतरिक घर्षण व दबाव अपनी चरम सीमा तक जा पहुँचा तो पूरी पृथ्वी पर लाखों ज्वालामुखियों का एक साथ भीषण विस्फोट हुआ। पृथ्वी के गर्भ में समाया अथाह लावा सम्पूर्ण पृथ्वी के धरातल पर फैल गया। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि विश्व के अधिकांश पर्वत, पहाड़, घाटियां आदि उसी लावे के प्रवाह का प्रतिफल हैं।

लाखों करोड़ों वर्ष पहले बने ज्वालामुखी आज भी अस्तित्व में है। ये ज्वालामुखी जापान, फिलीपींस, इंडोनेशिया, अमेरिका के पश्चिमी किनारे और पूर्व सोवियत संघ के कुछ हिस्सों में फैले हुए हैं। इस क्षेत्र को अग्नि का घेरा कहा जाता है। इन क्षेत्रों में अक्सर ज्वालामुखी के विस्फोट होते रहते हैं।

विश्व में वर्तमान समय में करीब पांच सौ ज्वालामुखी आकार की दृष्टि से कई सौ फुट चौड़ाई से लेकर कई मील तक चौड़े हो सकते हैं। अब तक का सबसे भीषण ज्वालामुखी विस्फोट 27 अगस्त 1983 में इंडोनेशिया के जावा और सुमात्रा के बीच स्थित काकताओ द्वीप में हुआ। इस भीषण आग उगलते लावे में 163 गाँव पूरी तरह तहस-नहस हो गये। समुद्र से उठी प्रचंड लहरों से छत्तीस हजार लोग मारे गये। यह विस्फोट हाइड्रोजन बम से 36 गुना अधिक ताकतवर था। चट्टानों के टुकड़े आस-पास के पचास किलोमीटर की ऊँचाई तक उछल गये। पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से पर इस विस्फोट की गर्जना सुनाई दी। इस ज्वालामुखी विस्फोट में 18 घन किलोमीटर लावा बाहर निकला।

दूसरे ज्वालामुखी विस्फोटों में सन् 1815 में सम्बावा द्वीप में हुए विस्फोट का नाम लिया जा सकता है। लकी (आइसलैंड) के विस्फोट में तो लावा 70 किलोमीटर दूर तक बहता चला गया था। मई 1980 में सेंट हेलन्ज और मई 1982 के अल शिकोन ज्वालामुखी विस्फोट भी उल्लेखनीय हैं। 1986 में जापान के सकुरीजका में भी शक्तिशाली ज्वालामुखी विस्फोट हुआ था।

यूं तो ज्वालामुखी का विध्वंसकारी स्वरूप ही प्रमुख है किन्तु कई पहलुओं से यह मनुष्य के लिए लाभदायक भी है। भूगर्भ शास्त्रियों के मतानुसार चट्टानों, पर्वतों, समुद्री टापुओं आदि के निर्माण में ज्वालामुखियों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं इसके अतिरिक्त इसके लावे में कई मूल्यवान धातुएं चांदी, सोना, तांबा, जस्ता, सीसा आदि भी प्राप्त होते हैं।

इंडोनेशिया का ल्यूजर ज्वालामुखी अपने भीतर हीरे समाये हुए हैं। जब वह फटता है तो लावे में से बेशकीमती हीरे निकलते हैं। विश्व का सर्वाधिक ऊँचा सुसुप्त ज्वालामुखी पर्वत अर्जेंटीना में स्थित हैं इसकी ऊँचाई 22834 फुट है। सबसे ऊँचा जीवित ज्वालामुखी भी अर्जेंटीना में ही स्थित है। वोल्कान एन्तोफैला नामक यह ज्वालामुखी बीस हजार तेरह फीट ऊँचा है। इनके अलावा अन्य उल्लेखनीय ज्वालामुखियों में सिसली का एटना (10705 फुट), जापान का फुजी (12395 फुट), पूर्वी अफ्रीका का किलोमंजरो (19564 फुट) आदि प्रमुख हैं। ◆

प्रेरक-प्रसंग : नरेश

नेकी कर

एक काफिला सफर के दौरान सुरंग से गुजर रहा था। उनके पैरों में कंकरिया चुभी। कुछ लोगों ने इस ख्याल से कि किसी और को न चुभ जाये, नेकी की खातिर उठाकर जेब में रख ली। कुछ ने ज्यादा उठाई कुछ ने कम। जब अंधेरी सुरंग से बाहर आये तो देखा वो हीरे थे। जिन्होंने कम उठाये वो पछताए कि ज्यादा क्यों नहीं उठाए? जिन्होंने नहीं उठाए वो और पछताए।

दुनिया में जिन्दगी की मिसाल इस अंधेरी सुरंग जैसी है और नेकी यहाँ कंकरियों की मानिंद हैं। इस जिंदगी में जो नेकी की वो आखिर में हीरे की तरह कीमती होगी और इन्सान तरसेगा कि और क्यों न की?

मैं 'किसी से बेहतर करूं' क्या फर्क पड़ता है।
मैं 'किसी का' बेहतर करूं बहुत फर्क पड़ता है।।

बाल गीत : राजेंद्र निशेश

लक्ष्य बड़े हैं

नये साल के लक्ष्य बड़े हैं,
हम भी तो तैयार खड़े हैं।

आँधी से लड़ना जो जाने,
ऐसे दीपक उजियारे हैं।
दुश्मन की भाषा पहचाने,
बन जाते हम अंगारे हैं।।

नया इतिहास हमको लिखना,
घाटी, पर्वत हमीं चढ़े हैं।

पतझर की भाषा को जानें,
बन जाते हम बहता झरना।
निकल पड़े जब नई डगर पर,
बाधाओं से कैसा डरना।।

खेल-मैदान कैसा भी हो,
प्रतिभागी से खूब लड़े हैं।

श्रम की पूजा करनी आती,
विकास पूर्ण हो जायेगा।
जैसा भी फैला अंधियारा,
नया सवेरा उग आयेगा।।

सच्चाई की मीठी भाषा,
हरदम सबके साथ जुड़े हैं।

प्रस्तुति : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

पक्षी जगत

90 मील तक उड़ान भरने में माहिर पक्षी

बच्चों, तुम्हें तो पता होगा कि पक्षियों की उड़ने की शक्ति उनके डैनों की बनावट पर निर्भर करती है। जो पक्षी तेजी से उड़ते हैं और जिन्हें दूर का सफर तय करना होता है उनके डैने लम्बे, पतले और नुकीले होते हैं। चौड़े डैने वाले पक्षी धीमी गति से उड़ते हैं। छोटे पक्षी आमतौर पर 20 से 40 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ते हैं। स्वर्ण जिरिया और बतासी नाम के पक्षी तो 60 मील प्रति घंटा तथा अमेरिका का बतासी तो 90 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ता है। हवा के रुख का असर उड़ने वाले पक्षियों पर विशेष रूप से पड़ता है। एक बार तो इंग्लैंड से आयरलैंड जाती हुई टिटहरियों को हवा उड़ाकर अमेरिका ले गई और उस लम्बे सफर को उन्होंने सिर्फ 12 घंटों में ही पूरा लिया। जो उनकी सामान्य गति से कई गुना अधिक था।

बाल कथा : राजेश अरोड़ा

सोच का तराजू

निधिवन में आशना नाम की एक बन्दरिया अपनी माँ के साथ रहती थी। वह बड़ी ऊर्जावान थी। नृत्य, गीत, संगीत, चित्रकला, अभिनय आदि हर क्षेत्र में वह पारंगत थी। लेकिन उसमें एक बुरी आदत थी। वह थी उसकी वाचालता। उसका वाणी पर नियंत्रण नहीं था। सोचे बिना ही वह अंट-शंट बोलती थी। जिससे सुनने वाले का मन बेचैन हो जाता। इस कारण वन के प्राणी उससे बात करने से कतराते थे।

एक दिन माँ ने उससे कहा– 'बेटा! दूसरों के साथ संभाषण करते समय अपने शब्द और अपनी क्रियाएं दूसरों के लिए बिल्कुल योग्य हैं या नहीं, इस पर विचार कर लेना चाहिए क्योंकि बहुधा प्राणी को बाद में पता लगता है कि वह गलत था।' लेकिन आशना ने माँ की बात को अनसुना कर दिया।

वन के हाथी पार्क के पास सोनू नाम की एक बन्दरिया रहती थी। उसका दूध का अच्छा कारोबार था। आशना की माँ उसके बचपन की सहेली थी।

एक रोज वन के साथ वाले गाँव में एक मेला लगा। दूर-दूर से प्राणी मेला देखने आने लगे। सोनू ने सोचा– वर्षों बाद मेला भरा है। मैं भी देख आती हूँ। यह सोच वह अपनी सहेली के घर गई। उस वक्त आशना की माँ घर में नहीं थी। उसने आशना से पूछा– बेटा! तुम्हारी माँ कहा है?

आशना बोली– माँ तो किसी काम से वन के बाहर गई हुई है। क्या कोई काम था?

सोनू ने कहा– हाँ, बेटा! मेला देखने जाना था।

आशना ने पूछा– मेला देखने से क्या होता है?

सोनू बोली– बेटा! मेला देखने से जीवन में आनन्द और खुशियों का संचार होता है। फिर मनोरंजन के साथ-साथ मेलों में हमारे समाज की परम्पराओं, मान्यताओं और संस्कृति की झलक भी मिलती है; इससे हमारे ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

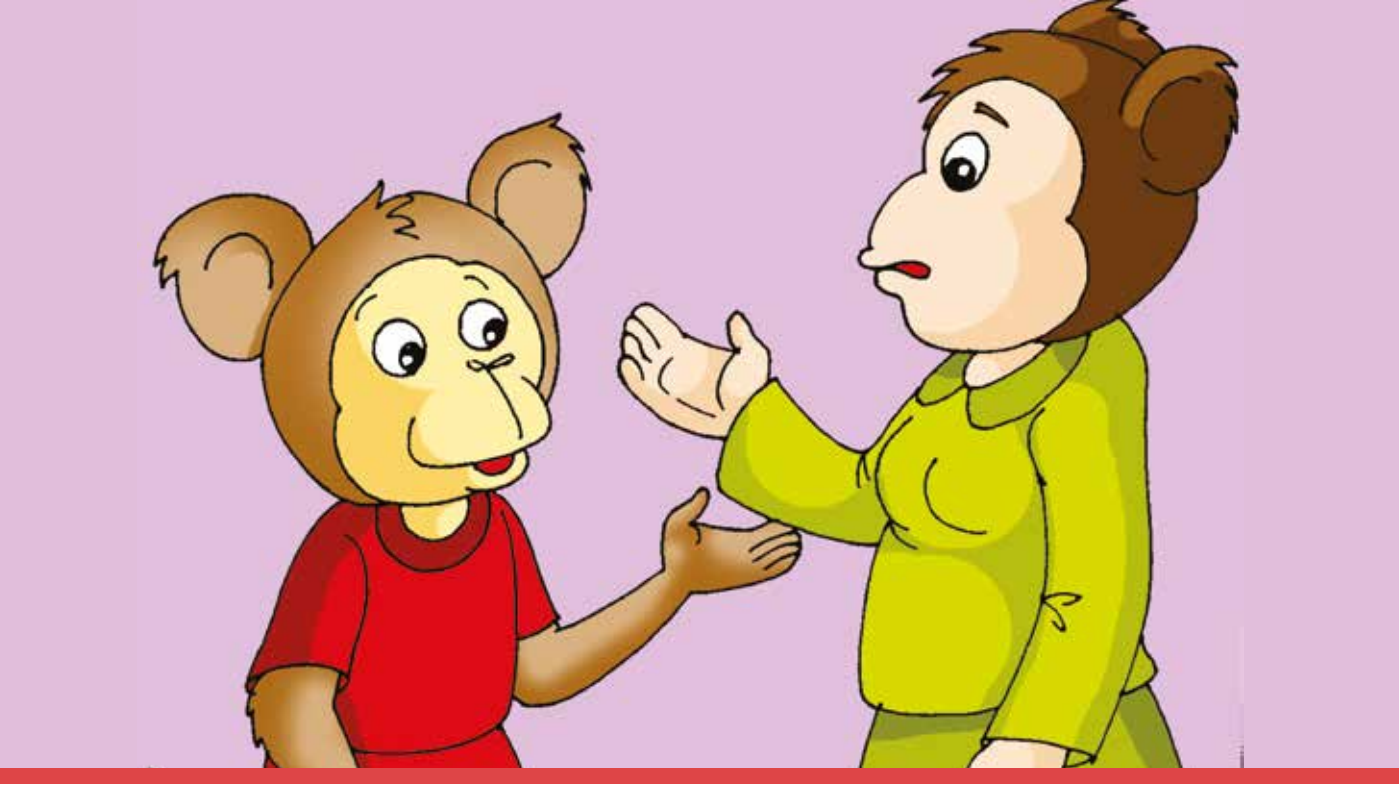

आशना बोली– बड़ी देर से तुमने मेला-मेला लगा रखा है। मेला देखने के लिए पैसे चाहिएं। हैं तुम्हारे पास पैसे? कंगाल कहीं की। आई बड़ी मेला देखने। चल फूट यहाँ से।

सुनकर सोनू चुपचाप वापस आ गई और अकेले ही मेला देखने चली गई। मेले में सोनू ने बहुत मनोरंजन किया और काफी खरीददारी भी की।

अगले दिन सोनू, आशना के घर गई। उसे कंगन और माला देते हुए वह बोली– बेटा! ये सब मैं तुम्हारे लिए मेले से लाई हूँ; रख लो।

यह देख आशना की आँखों से आंसू गिरने लगे। वह आत्मग्लानि से भर उठी। रोने लगी। वह काफी देर तक रोती रही। फिर रोते-रोते बोली– आंटी! मैंने अपने बुरे बोलों से आपके मन को आहत किया और सोचे बिना ही बोल दिया कि आप कंगाल हैं। मैं साफ गलत थी। आइन्दा मैं अपने हर बोल को सोच के तराजू पर तोलकर ही बोलूंगी। मुझे माफ कर दो।

सोनू, आशना के आंसू पोंछते हुए बोली– बेटा! अब तुम्हें माफी की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि जो प्राणी पश्चाताप के आंसू बहाता है, उनमें उसके सभी बुरे कार्य और कलुषित विचार धुल जाते हैं। उसका मन निर्मल हो जाता है। बेटा! अब तुम्हारा मन निर्मल है।

आशना में आए अचानक इस परिवर्तन को देख उसकी माँ को बड़ी खुशी हुई। अब वन का हर प्राणी आशना से बात करने के लिए लालायित रहता।

पहेलियों के उत्तर

1. तोता, 2. छाता, 3. साबुन, 4. अंगूठी, 5. सोना, 6. दीया बाती, 7. चक्की, 8. मेंहदी, 9. झाड़ू, 10. पिंजरा, 11. केंचुआ, 12. बांसुरी।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
-विकास कुमार

किट्टी, क्या तुमने बिल्कुल भी पढ़ाई नहीं की थी। तुम्हारे ज़ीरो नंबर आए हैं।
बेटा, आज तुम्हारी मैडम का फोन आया था। तुम पढ़ती नहीं हो! आज तुम्हारे टेस्ट में कितने नंबर आए?
मम्मी, आज टेस्ट पेपर नहीं मिला।
मैं जल्दी से टेस्ट पेपर छिपा देती हूँ।

मैडम ने मुझे सबके सामने डाँटा था। अब मैं मैडम की कुर्सी बदलकर टूटी कुर्सी रख देती हूँ।

चलो लंच ब्रेक हो गया है, बाहर खेलने चलते हैं।

लंच ब्रेक के बाद मैडम कक्षा में आकर पढ़ाने लगती है।
सभी बच्चे अपनी-अपनी कॉपी में लिखना शुरू करें।

मैडम, आप को प्रिंसिपल सर ने ऑफिस में बुलाया है।
किट्टी भूल जाती है कि उसने कुर्सी बदल दी थी।
अब मैं तुम्हारी टीचर ...
मैडम की कुर्सी पर बैठते ही किट्टी गिर जाती है और उसे चोट लग जाती है।
आज के बाद मैं ऐसा नहीं करूँगी। मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है।

संकलन : विभा वर्मा

कभी न भूलो

❖ मानवता हमारा धर्म, भारतीयता हमारी पहचान एवं मनुष्य हमारी जाति है।

– **महात्मा गाँधी**

❖ एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी शक्ति उसमें लगा दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ।

– **स्वामी विवेकानन्द**

❖ अपने आप पर भरोसा करने वाला कभी असफल नहीं होता।

– **सरदार वल्लभभाई पटेल**

❖ हमारे सुख-दुख का कारण दूसरे व्यक्ति या परिस्थितियां नहीं अपितु हमारे अच्छे या बुरे विचार होते हैं।

– **लाला लाजपत राय**

❖ फूल खिलने दो, मधुमक्खियां अपने आप उसके पास आ जाएंगी। चरित्रवान बनो, जगत अपने-आप मुग्ध हो जाएगा।

– **रामकृष्ण परमहंस**

❖ छोटे-छोटे रोज के सुधार व्यक्ति को ऊँचाई की तरफ ले जाते हैं।

❖ सोच बड़ी रखो, शुरुआत छोटी करो, पर शुरुआत अभी करो। – **रॉबिन शर्मा**

❖ त्याग के बिना किसी ध्येय की प्राप्ति नहीं होगी। – **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

❖ जब कोई व्यक्ति अच्छा काम करता है तो उसे पता नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है पर गलत काम करते समय उसे हर क्षण यह ख्याल रहता है कि वह जो कर रहा है वह गलत है। – **गेटे**

❖ समृद्धियां पराक्रमी मनुष्य के साथ रहती हैं, अनुत्साही मनुष्य के साथ नहीं।

– **भारवि**

❖ ज्ञानीजन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। – **कौटिल्य**

❖ निष्क्रियता संदेह और डर को जन्म देती है। सक्रियता आत्मविश्वास और साहस को जन्म देती है। यदि आप डर पर विजय पाना चाहते हैं तो घर पर बैठकर इसके बारे में मत सोचो। बाहर निकलो और व्यस्त हो जाओ।

– **डेल कार्नेगी**

❖ आपके जीवन की खुशी आपके विचारों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

– **मार्कस ऑरेलियस**

❖ शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य आत्मनिर्भर बनाना है। – **सैमुअल स्माइल्स**

❖ बच्चों को बेहतर बनाएं, भविष्य खुद बेहतर बनेगा। – **दलाई लामा**

❖ सफल व्यक्ति हमेशा नई चीज सीखने के लिए तैयार रहता है जबकि असफल व्यक्ति नई चीजें सीखने से डरता है।

– **अज्ञात**

बाल कविता : उदय मेघवाल

प्रभात वेला

नए दिवस की नई कहानी।
आई लेकर सुबह सुहानी।

समय सुबह का लगे सलोना।
खोल आँख अब छोड़ बिछौना।

उपवन की शोभा मस्तानी।
बहक रही है तितली रानी।

फुदक-फुदक कर डाली-डाली।
कूक रही कोयल मतवाली।

चीं चीं चहके चिड़िया रानी।
करे गिलहरी भी शैतानी।

सुंदर सुमन खिले उपवन में।
भरते भव्य भाव ये मन में।

तरुवर-पौधे धरती-धानी।
सूरज की करते अगवानी।

कविता : हरप्रसाद रोशन

जाड़े का मौसम

जाड़े का आया है मौसम,
लाया है सौगात कई।
ओढ़ रजाई नानी बैठी,
गर्मी वाली बात गई।।

मिन्नू ने पहना है स्वेटर,
नानू ने ओढ़ी टोपी।
टिंकू खाता गरम समोसा,
पीती है टीना कॉफी।।

बर्फ पहाड़ों में बिखरी है,
मैदानों में है कुहरा।
धीमे-धीमे होती बारिश,
हो रहा है शीत गहरा।।

अफ्रीकी लोककथा : अनिल सतीजा

एक खाऊं-दो या ....

अफ्रीका के घने जंगलों में एक छोटा-सा कबीला था। उस कबीले में कुछ घर ही थे। कबीले से थोड़ा हटकर एक छोटी-सी झोंपड़ी थी। उसमें एक वृद्ध लेकिन नि:संतान दम्पति रहते

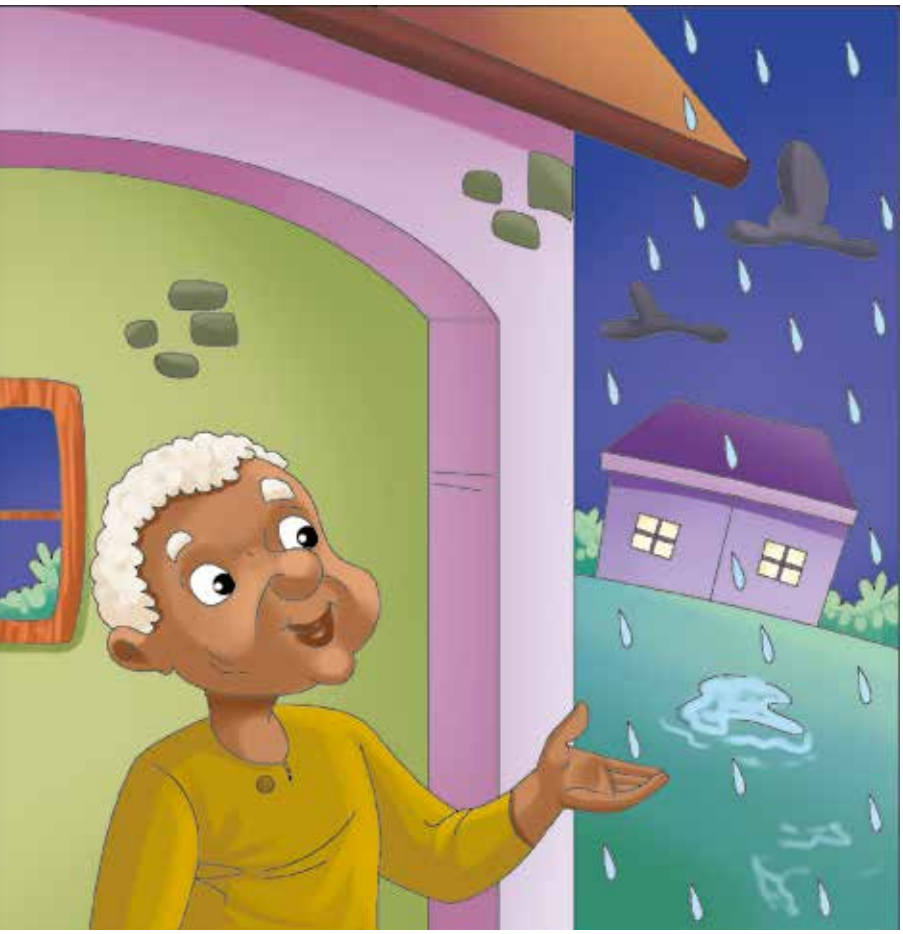

थे। बुढ़ापा आने पर भी उनमें बेहद लगाव था।

एक दिन जोर की वर्षा होने लगी। जिससे घर से निकलना मुश्किल हो गया। बूढ़ा घर के दरवाजे से बरसात देख रहा था। रात होने को थी। वह अपनी पत्नी से बोला– आज पकौड़ियां खाने का बड़ा मन कर रहा है। आज रात के खाने में पकौड़ियां ही बनाना।

–हाँ, हाँ क्यों नहीं? अभी बना लाती हूँ।– कहकर बुढ़िया अन्दर गई।

जब उसने बेसन का डिब्बा खोला तो चिन्तित हो उठी। अरे, बेसन तो बहुत कम है।– उसने सोचा– चलो, थोड़ी-सी पकौड़ियां ही बना लूँगी। ऐसे खराब मौसम में जाऊँ भी तो पता नहीं दुकान भी खुली होगी या नहीं।

बुढ़िया ने कड़ाही चूल्हे पर चढ़ाई और पकौड़ियां तलने लगी। सिर्फ तीन बड़ी पकौड़ियां ही बनीं। उसने उन्हें एक थाली में रखा तथा अपने पति को परोस दी।

बूढ़ा भी जान गया कि इतनी ही पकौड़ियां बनी हैं। वह बोला– अकेला थोड़ा ही खाऊँगा, तुम भी लो।

–न... न... नहीं पहले ही बहुत कम पकौड़ियां बनी हैं। तुम ही खा लो।

–अरे वाह जी, इसका मतलब तुम्हें भूखा सो जाने दूं? नहीं चाहिये मुझे भी ऐसी पकौड़ियां।– कहकर बूढ़ा मुँह फेरकर बैठ गया। बुढ़िया कुछ पल देखती रही।

उसी वक्त झोपड़ी को तीन चोरों ने घेर लिया। रोज किसी नये कबीले में जाकर चोरियां करना इनका धंधा था। तीनों ने आज बूढ़े दम्पति को लूटने का इरादा बनाया था। तीनों खिड़की

के नीचे छुप-छुपकर उनकी बातें सुनने लगे। जल्दी ही बूढ़ा-बुढ़िया दीया बुझाकर सो जाएंगे। तभी हम घर में घुसकर सारा कीमती सामान, बरतन वगैरह लूट लेंगे। अगर ये चिल्लायें भी तो कौन सुनेगा इनकी आवाज? एक तो इतनी बारिश, ऊपर से इनका घर थोड़ा हट के भी है कबीले से।

तीनों दीया बुझने का इन्तजार करने लगे और अपने कान उन्होंने अन्दर हो रही बातों पर लगा दिये।

उधर अचानक बुढ़िया ने उन तीनों चोरों को भी देख लिया। बस उसी समय उन्होंने भी अच्छी तरह विचार कर लिया कि अब क्या करना है। बस, फिर उन्होंने फिर से सजग होकर वार्तालाप शुरू कर दी।

इधर बुढ़िया ने वार्तालाप आगे बढ़ाया– देखो जी, यह तो सिर्फ तीन ही हैं, तुम ही खा लो, वरना भूखे रह जाओगे।

–रहने दो मुझे भूखा।

–अच्छा ठीक है, एक मैं खा लेती हूँ; बाकी के दो तुम खा लो। अब तो खुश?

चोरों ने यही बातें सुनी। एक चोर ने कहा– अरे, लगता है दोनों हमारे बारे में ही बात कर रहे हैं लेकिन हमें कैसे खा सकते हैं? आगे सुनते हैं। तीनों ने फिर कान लगा लिये।

इधर बूढ़ा बोला– नहीं, नहीं। मैं पूरे दो-दो खा जाऊँ और तुम सिर्फ एक। यह कैसा बटवारा है?

–अब मान भी जाओ।

–नहीं। ऐसा करते हैं, डेढ़ मैं खा लेता हूँ, डेढ़ तुम खा लो। यानि बराबर आधा-आधा, नहीं तो रहने दो इनको यहीं।

–ठीक है जी, तुम जीते, मैं हारी; दोनों डेढ़-डेढ़ खा लेते हैं।– बुढ़िया ने कहा।

यह सुनकर तो बाहर छुपे तीनों चोरों के होश उड़ गये।

–हे भगवान! यह लोग तो हम तीनों के टुकड़े-टुकड़े करके खा जाएंगे। साथियों लगता है, हम नरभक्षी कबीले

में आ गये हैं। जान बचानी है तो भाग लो सरपट यहाँ से। मेरे बाप की तौबा, जो इस धंधे में फिर आया। भागो जल्दी।– एक चोर ने कहा। फिर तीनों सिर पर पांव रखकर वहाँ से ऐसे भागे, जैसे भूत पीछे लगे हों।

इधर अन्दर बूढ़ा-बुढ़िया डेढ़-डेढ़ पकौड़ियां खाकर भागते चोरों को देखा और फिर आराम से सो गये। इससे आगे भी वे मरते दम तक एक-दूसरे के साथ खुशी से रहे।

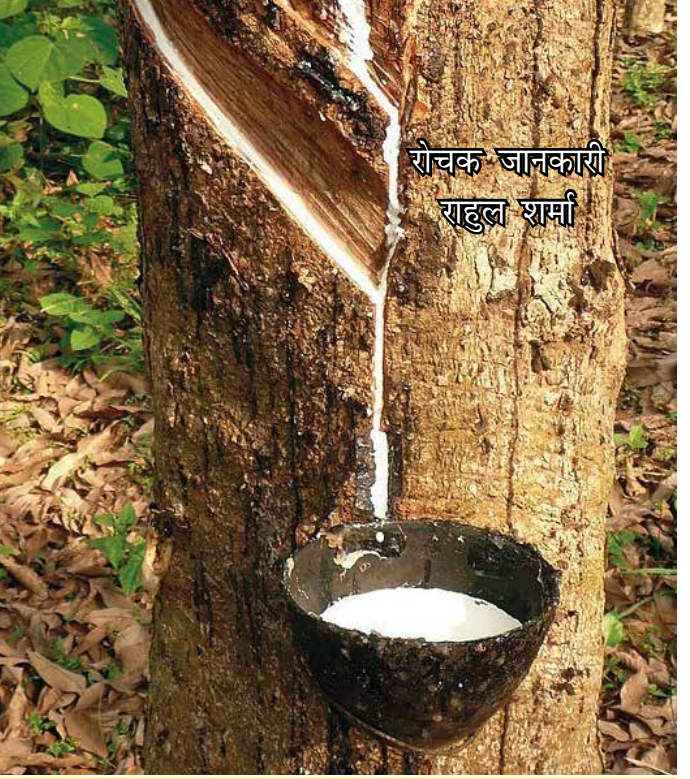

रोचक जानकारी
राहुल शर्मा

देश-विदेश के विचित्र वृक्ष

देश-विदेश में ऐसे विचित्र वृक्ष पाए जाते हैं कि जिन्हें देखकर जादुई वृक्षों की कल्पना साकार होने लगती है। तिलिस्मी कहानियों में चलने-फिरने वाले, विषैली गैसे छोड़ने वाले, लोगों का रक्त चूसने वाले वृक्षों की बातें पढ़ते हैं। लेकिन ऑस्ट्रेलिया में सचमुच ऐसे वृक्ष होते हैं जो ऊपर से झुककर, आदमी के शरीर में अपने कांटे चुभोकर सारा रक्त चूस लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया में ऐसे वृक्षों को 'चुम्बक वृक्ष' कहा जाता है। ऐसे वृक्षों को पहचान कर लोग इनसे दूर होकर गुजरते हैं लेकिन कोई न कोई जानवर उन वृक्षों का शिकार हो जाता है।

उत्तरी अमेरिका में 'काऊ ट्री' नामक एक ऐसा वृक्ष होता है जिसकी जड़ों से दूध निकाला जाता है। यह दूध बहुत गुणकारी होता है और गाय के दूध से बहुत मिलता-जुलता होता है। यही नहीं इस वृक्ष की छाल को तवे पर गर्म किया जाए तो रोटी की तरह फूल जाती है।

जावा के जंगलों में ऐसे कंटीले वृक्ष पाए जाते हैं जिनसे चिकना द्रव निकलता है जो बहुत भयंकर विषैला होता है। जंगलों में रहने वाले आदिवासी जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए बाणों पर इस विष को लगाकर जानवरों का शिकार करते हैं।

दक्षिण अमेरिका के मैरी प्रदेश में ऐसे वृक्ष होते हैं जिनके नीचे जमीन पर खूब पानी भरा रहता है। ऐसा लगता है कि रात को खूब बारिश हुई है। जबकि वहाँ महीनों से बारिश नहीं होती है। रात को वृक्षों से पानी टपकता है और बारिश का आभास होता है। वैज्ञनिकों ने बताया है कि उन वृक्षों पर बहुत घने पत्ते होते हैं। उन पत्तों की एक विशेषता होती है कि वे वायुमंडल से बहुत सा पानी एकत्र करके नीचे टपका देते हैं और वृक्ष के नीचे जमीन पर बारिश का आभास होता है।

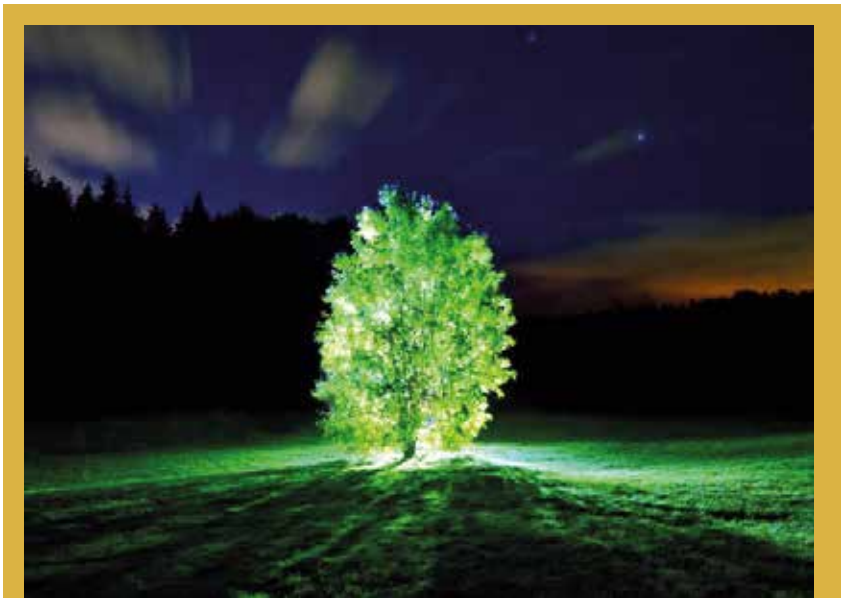

अफ्रीका में मेडागास्कर द्वीप पर केले के वृक्षों की तरह बड़े-बड़े पत्ते वाले वृक्ष होते हैं। इन वृक्षों के पत्तों को नीचे से काटने पर पानी निकलता है। जंगल में घूमने वाले लोग इस वृक्ष के पत्तों को काटकर खूब पानी पीते हैं। पत्तों से इतना पानी निकलता है कि तीन आदमी खूब पानी पी सकते हैं।

अपने देश के हिमालय पर्वत पर ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं जो रात के समय रोशनी करते हैं। पहाड़ों पर काम करने वाले लोग इन वृक्षों की रोशनी के सहारे अपने गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। वृक्षों से दूर-दूर तक रोशनी फैल जाती है।

मलेशिया में ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं जो अपने आसपास के पौधों को खा जाता है। विशाल वृक्ष 'फिनरसबी जिकोसा' आसपास के पौधों पर झुककर उनकी हरियाली चूसकर उन्हें नष्ट कर देता है। ◆

प्रस्तुति
-विद्या प्रकाश

बर्फ में बेफिक्र बकरी

उत्तरी अमेरिका में पायी जाने वाली पर्वतीय बकरी समुद्र तल से दस हजार फुट की ऊँचाई पर कड़कड़ाती और हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में भी बड़े मजे से रह लेती है। इसका वैज्ञानिक नाम आरिमनास अमेरिकानस है। यह गर्मी के मौसम में खा-खाकर शरीर में इतनी अधिक मात्रा में चर्बी संचित कर लेती है कि यह जाड़े में केवल बर्फ में जमी बेरियों को ही खाकर बड़े आराम से अपना गुजारा कर सकती है। बर्फ के समान सफेद रंग के खूब मोटे फर तथा शरीर में संचित ढेर सारी चर्बी की बदौलत यह सर्दी से बिल्कुल नहीं डरती। डर तो इसे शिकारियों और सियारों से भी नहीं लगता क्योंकि अलास्का के दुर्गम हिमाच्छादित पहाड़ों पर शिकार करने का साहस शायद ही किसी आखेटक में हो। यदि कोई शिकारी इन दुर्गम पहाड़ों तक पहुँच और चढ़ सकने में सफल हो भी गया तो उसका इन बकरियों से पार पा सकना मुश्किल है। यह बकरी ऊँचे पर्वतों पर दौड़ने तथा श्वेत वर्ण की होने के कारण छिपने में चैम्पियन है। एक बात और इस पर्वतीय बकरी के परिवार में माँ की हुकूमत चलती है। छोटे-छोटे बच्चे झुण्ड बनाकर माँ के साथ रहते और बड़े होते हैं। ◆

पढ़ो और हँसो

एक सीधा-सादा देहाती रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर जाकर टिकट बाबू से बोला– एक टिकट दीनदयाल का देना।

टिकट बाबू बड़ी देर तक स्टेशनों के नामों की पुस्तक खोलकर देखते हुए परेशान होकर बोला– अरे, यह है कहाँ?

देहाती : बाबू जी, वह बाहर बेंच पर बैठा है।

एक हाथी पुल पार कर रहा था। उसकी पीठ पर एक चींटी बैठी थी। बीच नदी में पुल जोर से चरमराने लगा तो चींटी बोली– पार पहुँच जाओगे या मैं उतरूँ?

एक लड़का पार्क में साइकिल चला रहा था। उसकी माँ गर्व से उसे देख रही थी। पहले चक्कर में माँ के पास आने पर लड़के ने कहा– देखिये मम्मी, हाथों के बिना। दूसरे चक्कर में बोला– देखिए मम्मी, पैरों के बिना। तीसरे चक्कर में वह चिल्लाया– देखिए मम्मी दांतों के बिना।

एक आदमी रात को गली के सामने खड़ा था।

–कौन हो?– वहाँ से गुजरते हुए चौकीदार ने पूछा।

–शेर सिंह।– जवाब मिला।

पिता का नाम– शमशेर सिंह।

कहाँ रहते हो?– शेरोंवाली गली में।

यहाँ क्यों खड़े हो?– कैसे जाऊँ आगे कुत्ता खड़ा है। – मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

एक फौजी अफसर ने मेज पर रखे बिस्कुट के डिब्बों की तरफ इशारा करते हुए अपने जवानों से कहा– जवानों इन बिस्कुटों पर इस तरह टूट पड़ो जैसे लड़ाई में दुश्मन पर टूटते हैं।

यह सुनते ही जवान बिस्कुटों पर टूट पड़े और उन्हें खाने में जुट गए। एक जवान कुछ बिस्कुट खाता और कुछ अपनी जेब में रखता जा रहा था।

अफसर : तुम ये क्या कर रहे हो?

जवान : सर! कुछ दुश्मनों को कैदी बना रहा हूँ।

– पूजा संगतानी (बालोतरा)

एक आदमी : (अपने मित्र से) तुमने अपनी छुट्टियां कैसे बिताईं?

मित्र : एक दिन घुड़सवारी में और बाकी दिन अस्पताल में।

अनुज : भैया! 'आई डोन्ट नो' का क्या अर्थ है?

मनुज : 'मैं नहीं जानता हूँ।'

अनुज : आप नहीं जानते तो आपने अंग्रेजी में एम.ए. कैसे कर लिया?

डॉक्टर : (मरीज से) मैंने तुम्हें याददाश्त ठीक करने की दवाई दी थी। कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : जी, अभी तक तो कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं रोज दवाई लेना भूल जाता हूँ।

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) 'तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं' तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

माँ : बेटे, जरा देखना तो दूध उबलकर बाहर तो नहीं आ रहा?

बेटा : माँ आप चिन्ता न करो मैंने रसोईघर का दरवाजा बन्द करके कुंडी लगा दी है।

ग्राहक : सेब क्या भाव है?

फलवाला : दो सौ रुपये किलो। खरीदने हैं क्या?

ग्राहक : खरीदने नहीं सिर्फ सूंघने हैं।

बेटा : पापा, गुलाब का पौधा लगाए एक हफ्ता हो गया है पर अभी तक उसकी जड़ें नहीं निकलीं।

पिता : लेकिन बेटे, तुम ये कैसे जानते हो?

बेटा : क्योंकि मैं रोज उसे उखाड़कर देखता हूँ।

एक कंजूस व्यक्ति को करंट लगा।
उसकी पत्नी ने पूछा– आप ठीक तो हो ना।
व्यक्ति बोला– मैं ठीक हूँ। तू मीटर देख, यूनिट कितना बढ़ा है।

– देवराज 'देव' (जम्मू)

ग्राहक : यह मच्छरदानी कितने की है?

दुकानदार : पाँच सौ रुपये की। इसमें कोई मच्छर नहीं घुस सकता।

ग्राहक : मुझे नहीं लेनी। जब इसमें मच्छर नहीं घुस सकता तो मैं कैसे घुस सकता हूँ?

अध्यापक : (वीरू से) तुमने कितने दिनों तक लगातार बारिश होते देखी है।

वीरू : एक दिन तक।

अध्यापक : क्या दो दिन तक बारिश नहीं हो सकती?

वीरू : नहीं सर! क्योंकि बीच में रात भी तो होती है।

यात्री : (रिक्शेवाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?

रिक्शेवाला : पचास रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।

यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

मालकिन : (नौकरानी से) देखो, हम लोग सुबह ठीक साढ़े सात बजे नाश्ता कर लेते हैं, समझी?

नौकरानी : जी, अगर कभी मैं साढ़े सात बजे तक न पहुँच सकूं तो आप नाश्ते पर मेरा इंतजार न कीजिएगा।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

कहानी : पूजा संगतानी

इसी कुर्सी पर ...

हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही गंगाराम नौकरी के लिए चिन्तित हो उठा। तभी उसे अपने पड़ोस के चाचा जी की याद आई। चाचा जी शहर में क्लर्क की नौकरी करते थे। एक साल पहले गाँव में आने पर चाचा जी ने गंगाराम को अपना पता लिखकर दिया था। उन्होंने कोई छोटा-मोटा काम दिलाने का वायदा भी किया था। गंगाराम ने माँ को पूरी बात कह सुनाई और चाचा जी से मिलने शहर की ओर चल पड़ा।

गंगाराम चाचा जी के दफ्तर में दाखिल हुआ। वहाँ के एक कर्मचारी ने उसे बताया कि वह किसी काम से बाहर गए हैं। गंगाराम चुपचाप उनके आने की प्रतीक्षा करने लगा। सामने वाले बड़े कमरे में गंगाराम को एक खाली कुर्सी दिखी। वैसी अजीबोगरीब घुमावदार कुर्सी उसने इससे पहले नहीं देखी थी। वह उसी कुर्सी पर जाकर बैठ गया। मगर अभी वह उस आरामदेह कुर्सी पर बैठने का आनन्द ले रहा था कि एक अजनबी ने उसे डपटकर कुर्सी से उतार दिया और स्वयं बैठ गया। गंगाराम रुआंसा होकर कमरे से बाहर निकला। वहाँ पता चला कि वह उस कार्यालय के इंजीनियर थें वह कुर्सी उन्हीं की थी।

तभी चाचा जी दफ्तर में आ गए। उन्होंने गंगाराम के सिर पर स्नेह से हाथ फिराकर कहा– बेटा, कैसे आना हुआ अचानक?

–चाचा जी आपने छोटा-मोटा काम दिलाने का वायदा किया था न? उसी के लिए आया था। मगर अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है।– गंगाराम ने उत्तर दिया।

–क्यों कोई दूसरी नौकरी मिल गई है।– चाचा जी ने पूछा।

–जी नहीं, चाचा जी मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपके दफ्तर के इंजीनियर ने अपनी जिस कुर्सी से आज मुझे डांटकर उतारा है, एक दिन मैं उसी कुर्सी पर आकर बैठूंगा।

–मगर उस कुर्सी पर बैठना इतना आसान नहीं है बेटा, जितना तुम समझ रहे हो।– चाचा जी ने कहा।

–चाचा जी मैं मुश्किल को आसान बनाने की भरसक कोशिश करूंगा।– गंगाराम ने उत्तर दिया।

वापस लौटकर गंगाराम ने इंजीनियर बनने का दृढ़ निश्चय कर लिया और परीक्षा की विधिवत तैयारी आरम्भ कर दी। उसकी मेहनत सचमुच रंग लाई। थॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज रुड़की से 1873 में वह एक प्रतिभा सम्पन्न इंजीनियर बनकर निकला। लाहौर में गंगाराम की पहली नियुक्ति सहायक इंजीनियर के पद पर हुई। फिर तो उसने धड़ाधड़ विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण की। कुछ ही वर्षों में वह मुख्य इंजीनियर के पद पर जा बैठा। जिस इंजीनियर ने उसे डांटकर कुर्सी से उतारा था। उसे भी अपनी भूल सुधार का अवसर मिला। अब गंगाराम के अधीन ही उन्हें भी कार्य करना पड़ रहा था।

गंगाराम ने इंजीनियरिंग में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। विश्वविद्यालय का नक्शा उन्हीं की सूझ-बूझ से तैयार हुआ था। उनकी विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित होकर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से भी विभूषित किया था।

अक्टूबर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. विनीत सिवाच 14 वर्ष
   गाँव : कचरौली, पोस्ट : बाबरपुर मंडी,
   जिला : पानीपत (हरियाणा)

2. प्रज्ञा साऊ 13 वर्ष
   सी 3-104, लोक सुरभि चन्द्रमुखी,
   पत्री पुल के पास, कल्याण (वेस्ट)
   जिला : ठाणे (मुम्बई)

3. अभिजीत कुमार 11 वर्ष
   गाँव : बंशीपुर, पोस्ट : अमिलाई,
   जिला : चन्दौली (यू.पी.)

4. शेषवन्ती कुमारी 15 वर्ष
   गाँव : मोहिउद्दीन, पोस्ट : बरियावन,
   जिला : अम्बेडकर नगर (यू.पी.)

5. यशिका पंजवाणी 12 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी, भुरावाव के पास,
   चार रास्ता, गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

ध्रुव (राजीव नगर, पलवल),
अक्षरा (पुरानी कटरा रोड, प्रयागराज),
हिंमाशु सिंह (सरया, देवरिया),
अंबर लाम्बा (वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली),
आनन्दित (सेक्टर-39, लुधियाना),
मिहिर (चन्द्रप्रभु नगर, अजमेर),
पान्या (आवास विकास कॉलोनी, अलीगढ़),
कीर्ति (शाहबाद मारकंडा),
रिद्धि सैनी (राजनगर, नई दिल्ली),
धारा (होसपेट, कर्नाटक),
स्वास्तिका (सिडको, नासिक),
मंथन पंजवाणी, द्विज, चिराग गुरनाणी, लहर,
चांदनी मूलचंदानी, मुस्कान, ओम सोमजनी,
कबीर, ऋषि, आर्या हेमराजाणी, निशिका,
रोशनी मनवाणी, शिव बंबाणी, मोहित,
हार्दिक, अनंत, सुमित, यशिका (गोधरा)।

जनवरी अंक रंग भरो

पेज नं. 49 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 फरवरी 2022** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल 2022 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

रिमझिम फुहारों में भीगता सितम्बर अंक मिला। शिक्षा के बगैर जीवन अधूरा है और जो कुछ भी आज हम हैं तो सिर्फ शिक्षा के जरिये ही हैं।

कहानियों में 'मूर्ति से प्रेरणा' और 'शिक्षक की भूमिका' अच्छी व सच्ची लगीं। गाँधीवादी नेता डॉ. पट्टाभि सीतारमैया पर लिखा प्रेरक-प्रसंग जानदार लगा। 'समुद्री जीव ह्वेल शार्क' पर जानकारी रोचक लेख के लिये साधुवाद।

कविताएं भी इस बार मन को छू गईं। खासकर 'हिन्दी से है हिन्दुस्तान' और 'हिन्दी एक गुलशन' प्रशंसनीय लगी। विशेष लेख 'अनुशासित चींटियों का एक दल' जानकारीपूर्ण था। इसके अलावा 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' भी शिक्षाप्रद लगे।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बडनेरा, अमरावती)

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कविताएं, कहानियां, चुटकुले बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्य हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करते हैं। हँसती दुनिया को जो कोई पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।
बच्चों के लिए हँसती दुनिया एक अच्छी पत्रिका है।

– ज्योति शर्मा (चार के.एस.पी.)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार में रहता हूँ। मेरी यह कामना है कि हँसती दुनिया बच्चों को हँसाती रहे और प्रगति पथ को प्रशस्त करती रहे। – मुकेश शर्मा (छप्परा)

मैं हँसती दुनिया मासिक की नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया का नवम्बर अंक मिला। यह अंक भी अन्य अंकों की तरह ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक था।

इसमें प्रकाशित सभी कहानियां, कविताएं व लेख बहुत शिक्षाप्रद व मनोरंजक थे।

स्तम्भों में 'अनमोल वचन' एवं 'कभी न भूलो' भी शिक्षाप्रद होते हैं।

पढ़ो और हँसो भी अच्छे लगे।

– आस्था (त्रिनगर, दिल्ली)

हँसती दुनिया

नये रूप में आती हँसती दुनिया।
छोटे-बड़े सबको भाती हँसती दुनिया।
महीने भर में इंतजार कराती हँसती दुनिया।
सबके मन को लुभाती हँसती दुनिया।
अच्छे-बुरे का पाठ पढ़ाती हँसती दुनिया।
सच्चे-झूठे का पाठ समझाती हँसती दुनिया।
बच्चों को खूब हँसाती हँसती दुनिया।
अपनों को दोस्त बनाती हँसती दुनिया।
ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा लाती हँसती दुनिया।
मान-सम्मान की दिशा समझाती हँसती दुनिया।
बच्चों के आगे कदम बढ़ाती हँसती दुनिया।
पढ़ो और लिखो का संदेश फैलाती हँसती दुनिया।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बडनेरा, अमरावती)

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सद्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें :-

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

–सुलेख 'साथी'

प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।